OM MANDALI

SHIV SHAKTI AVATAR SEVA SANSTHAN

RAIPUR

PRAJAPITA BRAHMABABA KI VANI

(Hindi Version)

Volume 2

!!ॐ शांति!!

"प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की वाणी"

(1) बाबा इधर आए तो परमधाम में आना जाना करतें हैं या इधर ही...?

भई एक बात बताओ, ***अगर आपका दूसरे एरिये में घर है और आपने बाहर ले लिया किराए पे तो घर तो वो आपका ही है। ताला भी आप लगा सकते हो, चाबी भी आपके पास है आप आना जाना भी कर सकते हो, खोल भी सकते हो! तो घर किसका है? बाप का... तो आना-जाना कौन करेंगा? समझ में आया।*** बाप आना-जाना करता है क्योंकि घर किसका है, मालिक कौन है, अपने घर में आना जाना नहीं करेंगा तो कहाँ करेंगा! (11.03.2021)

(2) ***बाबा परमधाम से एक बार आते हैं फिर बच्चों के साथ ही जाते हैं...तो फिर वाणियों में ऐसा आता है कि बाबा परमधाम से आए।***

देखो बच्चे हर बारी क्या कहेंगे बाबा परमधाम से आए। अब यह बतावे कि, ***आना-जाना किसको कहते हैं? आना और जाना। ऐसा यह नहीं होता कि बाबा बिल्कुल आ गए हैं तो जाएंगे ही नहीं। अर्थात सृष्टि पर बाप का पार्ट 100 वर्ष का होता है। परमानेंट बाप 100 वर्ष से पहले परमधाम में फिट नहीं हो सकते। आना जाना और फिट होना दोनों अलग बात है।*** ठीक है एक चीज को आप कहीं फिट कर दो, वह हिलेंगी नहीं। पर एक ऐसे लगा करके ऐसे लगा कर के आ जाएंगी तो ***परमधाम में बाबा फिट तब होता है जब स्वयंवर हो जाता है। फिरा जा करके एकदम चिपक जाता है। फिर कहेंगे गहरी नींद में सो गया।*** अब कुछ भी बजेगा तो उठेगा नहीं । (2500 वर्ष तक सो जाते हैं) आराम से !! मतलब एक स्थान पर चिपक जाता है... फिक्स!! क्योंकि बच्चे सुख में है। ***वैसे आना जाना आना जाना उनके लिए तो क्या है? एक सेकंड का एक घड़ी का ही काम है। उधर बैठकर के कभी इधर भी चलाएंगा और इधर बैठ करके कभी सबको चलाएगा। बच्चे बाप एक क्या कहेंगे, एक हवा है हवा है ना!!*** बोलते हैं आंखें नहीं, फिर भी सृष्टि का कारोबार चला रहा है। सबका सुन रहा है, कान नहीं है फिर भी सब का सुन रहा है। गूंगे का भी सुन रहा है, जो बोल नहीं सकता। सुन रहा है... क्योंकि गूंगे में और उसमें कोई फर्क ही नहीं!! बेहरे में और उसमें कोई फर्क ही नहीं वह सब की सुनता है। ठीक है ना बच्चे, क्योंकि वह सुनता है तो सच्चे दिल की सुनता है। बाबा परमधाम में फिट सतयुग में ही होंगा। संगमयुग पर.... अब देखो! आप कहीं कोई नौकरी करते हो, अब आप बारी बारी आते जाते हो, आते जाते हो। कारोबार दोनों जगह चल रहा है ना! घर

में भी चल रहा है, दुकान में भी चल रहा है। ऐसे तो नहीं है कि आप दुकान में चिपक गए हो और घर में नहीं जा सकते। घर बंद होगा तभी तो दुकान में चिपकोगे!! यहाँ जब दुख की दुनिया खत्म होंगी तभी तो परमधाम में चिपकेगा!! आना जाना, आना जाना!! बिना टिकट के आना जाना... पैसा थोड़ी लगेगा जो अभी आएगा। (11.03.2021)

(3) ***शिवलिंग पर साँप क्यों दिया है***?

शिवलिंग पर साँप क्यों दिया है पेहले बताओ...? ***सारी दुनिया के विष को धारण करता है शिव सबको पतित से पावन बनाता है। ये पाँच विकार क्या है...जहरीले नाग है...***. इसीलिए दिखाते हैं ना, सागर मंथन में जो विष था, वो किसने पिया? शंकर को दिखाते हैं, बिल्कुल सही दिखाते हैं। क्योंकि शिव ज्योतिर्बिंदु कैसे विष पी सकता है!! किसको धारण करके पिएगा? शंकर के शरीर को धारण करके ही वो पूरा विष उनके पूरे शरीर में जैसे पूरे सांप में एक जहर की छोटी सी गोली होती है ना... और कंठ में होती है। उसका प्रतीक फिर सांप दिखा दिया है।ऐसे ही शंकर के कंठ में जहर रह जाता है नीचे नहीं उतरता।तो इसलिए सांप का प्रतीक क्या है? उसको उस पर भी विजय प्राप्त करने वाला हर तरह से काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार उसको भी जीतने वाला। *(शंकर की बॉडी को नीला दिखाते बाबा उसका क्या?) वही तो है ना...जैसे पीता है तो बॉडी क्या हो जाती है नीली हो जाती है... । (22.02.2021)

(4) बाबा शंकर के पार्ट के बारे में कुछ बताइए ना ये सारा संसार तो शंकर जी का पूजा करता है ना शरीर समझ के...
अरे वाह! ***तायाजी! क्यूँकि सबको निपटाने का काम करता है ना इसीलिए सब उसकी पूजा करते हैं। वही तो एक है जिसकी बरात में कीड़े, मकोड़े, भूत प्रेत जाते हैं जो सबको एक समान समझता है।*** नहीं तो देवताओं की बरात में देवताएं जाएंगे है ना!!इंसानों की बरात में इंसान जाएंगे, बंदरों की में बंदर जाएंगे। ***महाकाल की बारात में बंदर, कीड़े-मकोड़े देवताएं, देव -दानव सब सब जाते हैं, इसलिए सब उनकी पूजा करते हैं*** क्योंकि सब उनसे प्यार करते हैं। (22.02.2021)

(*5) वो सब लोग बंगाल में रथ सोच रहे थे के पूर्वी बंगाल से इस रथ को बोला हैं अव्यक्त वाणी में ऐसा बोला है, उसी लिइन को लेकर सब घोटाला कर दिया हैं*
बच्चे घोटाला तो और भी बहुत सारे बच्चे करने वाले हैं, पर जो घोटाला बनाया है ना, जिसने घोटाला बनाया है, पहले वो आवे तो.... फिर सारे घोटालों का लेना देना कर लेंगे। सब की बुद्धि में घोटाले बनाकर रखे बड़े-बड़े घोटाले बनाके रखे हैं। ***बुद्धि में उल्टा ज्ञान देकरके उल्टी पट्टी पढ़ाई वैसे भी ड्रामा का चक्र है जो दूसरे धर्म की आत्मा है, उसका काम***

ही ये है । और अब आप देख रहे हो, कैसे, ऐसे तोड़ तोड़ के तोड़ तोड़ के अलग कर करके कैसे अपने में शामिल करते हैं* , लेकिन ये अब बापका गेरंटी है। यहाँ से प्लेन बन जाओ, जितनी भी आपकी पोटलियाँ है ना वो एक चम्मच काफी है आपको पिलाने के लिए ठीक है।(19.12.2020)

(*6) वो सेवकराम भागीदार के बारे में बाबा थोड़ा बोलिए । यहाँ बहुत से लोग ऐसा बोलते है कि हम सेवकराम थे, हमारे अंदर परमात्मा आया

सेवकराम अगर भागीदार होता, अगर सेवकराम में परमात्मा आता तो बुद्धू कैसे होता!! उसको ये ही नहीं पता कि तेरा घाटा किस में फायदा किस में है? परमात्मा कहाँ से आया? हर एक बच्चे ने एक दूसरे पहलू को उठाया क्योंकि हर कोई सोचते हैं दूसरे पहलू को उठाया और उसी पे कहानी लिखना शुरू कर दिया। क्या था सेवकराम? क्या कहेंगे सेवकराम को? अगर और जो जो भी बोलते हैं कि मैं सेवकराम था तो पहले बताओ, ***अगर सेवकराम थे तो कहाँ आपका सबकुछ चिट्ठी पतरा कहाँ पे है, दिखावे । ये तो बड़ी मूर्खता वाली बात है।*** अच्छा चलो ठीक है सेवकराम था... अब सेवकराम बच्चों को कैसे संस्कार देंगा । अब अपन को केहना नहीं चाहिए क्यूँकि अपन क्या कहेंगे, बहुत अच्छे थे, जो भी थे। सेवकराम थे दो बच्चों को भेजा जाओ उस बाबा की कोठरी में हीरे पड़े होंगे। उठा के ले आना चमकने वाले । उठाके चलते बने और कहानी में क्या आता है- छोटे बच्चों ने हीरे चुराए अब छोटे बच्चों को क्या पता? छोटे बच्चे कुछ और सामान भी उठा सकते थे। चमकने वाले ही क्यों उठाये!! क्या था सेवकराम!! हाँ भागीदार था, बिजनेस में..... था....। ज्ञान में नहीं आया था। बिल्कुल नहीं आया । बच्चे ना वो ज्ञान में आया... उसके बाद उसने अपना बिजनेस चलाया पर बिजनेस ठप हो गया था उसका बच्चे का बिजनेस क्योंकि उसको बिजनेस चलाना नहीं आता था उसको। सारी डील जिसके साथ करना था तो अपन करते थे, अपन जाते थे। कुछ बड़ा बड़ा सामान देखता था, उसको लगता था, इसी की कीमत है। हीरों की कीमत उसकी दृष्टि में नहीं थी। कहते हैं अपन सेवकराम थे तो प्रत्यक्षता कहाँ है? क्योंकि ये जो कहते हैं, हम ये थे, हमने ऐसे किया, हमने ये किया, हमारे अंदर बाबा आए थे, तो उसको पता पड़ा था तो ब्रह्मा ने अपना नाम लेकर के अपनी प्रत्यक्षता चला दी । ब्रह्मा को हमने समझाया ऐसे बुद्धू बच्चे भी पैदा हो गए। एक बात बतावे जो खुद सेवकराम ***गुरु के पास नहीं जाता था, तो अपनको कैसे भेजेंगा। जो खुद गुरु नहीं मानता था, खुद भी पहले तो मांस, मच्छी चलता था ना, तो खुद सेवकराम सेवन करता था तो गुरु के पास कहाँ से जाएंगा । बताओ कहाँ से जाएगा? नाम बड़ा अच्छा है सेवकराम पर कर्म कैसे थे, जैसे आज कहते हैं ना हम ब्राह्मण हैं, पर खाते क्या हैं ।*** तो ये जो सबकी बुद्धि में सेवकराम का किचड़ा है ना मेजॉरिटी उन बच्चों के होगा अपन समझ गए... । (19.12.2020)

(7) बाबा को जो काली गला काटती है उसका क्या अर्थ है?

देखो बच्चे ये उल्टा मीनिंग लिया है। गला काटना मतलब कौन सा गला काँटना, ***सारी बुराइयों का गला काटना विकारों का गला काँटना।*** लेकिन अब क्या कर दिया है? बुद्धि ना... ***इसलिए तो अगर सही अर्थ होता तो कलयुग नही आता ।*** जो दूसरों का गला काँटते हैं, अब खुद उनका गला काटेंगा । बिल्कुल कटेगा.... क्योंकि बापने कहा, गला बुराइयों का काँटना और गला काँटना पशु, पक्षियों का गला काँटना शुरू कर दिया । तो अब कौनसा गला काँटना है? सहीं अर्थ जब सबके सामने आएगा तभी तो सही मायने में पूरा होगे । सही अर्थ तभी समझ में आएगा। ***ऐसे तो भक्ति मार्ग में बहुत उलझा उलझा करके सब को फँसाया है। फिर कहते हैं भई ऐसी सजा मिलेंगी, उधर जाएंगे तो तेल के काढ़ाई में तलेंगे।*** तल तल के निकालेंगे.... क्यों भई खाना थोड़ी है जो तल तलके निकालेंगे। ये जो तलके निकालेंगे तो खाना थोड़ी है बैठके जो तलेंगे उधर और तेल का काढ़ाया आया कहाँ से? ***धर्मराज का पार्ट चलता है, दृष्टि से ही एक से टी वी दिखाया जाएगा। आपके पाप कर्म क्या है? एक दृष्टि से साथ साथ सजा होंगी । आत्मा देखते देखते ही जैसे अपने कर्मों को देखेंगी, उसी घड़ी उसको सजा होंगी क्योंकि एक में वो ज्वाला निकलेंगी और एक में पाप कर्मों की टी वी पुण्य कर्मों के टी वी चलेंगी । ये बापका सिद्धांत है ।*** और वतन के तो इतने राज है। समय-समय प्रमाण समय प्रमाण सारे राज खोलते रहेंगे । पर आज तो मिलन मनाने आए हैं।(19.12.2020)

(*8) बाबा वह जो बोलते हैं कि बाबा कोलकाता में प्रवेश करते हैं और दादी लोग सुनाते हैं कि बाबा सिंध हैदराबाद में पहले आये?*

देखो बच्चे पार्ट दोनों जगह चला है। इधर आए बिजनेस के लिए आए थे क्योंकि उस समय बड़ी डील होने वाली थी। आए इधर बात किया अचानक से झटका लगा... अचानक से देखा के हो क्या रहा है, समझ नहीं आया। तो भक्ति थी गीता थी उसके अलावा कुछ नहीं संस्कार थे । तो बैठे बैठे बैठे बैठे अपने आप आंखें बंद हो गई । ***बच्चे इस चीज में उलझे हुए हैं, सिंध में आए पहले या कोलकाता में आए । इस चीज में उलझे हुए हैं आज इस चीज को क्लियर करते हैं। बाबा की शक्तियाँ जो थी सिंध में, क्योंकि वो जो पावर थी, जब भक्ति में बैठते थे, समझ में नहीं आता था हो क्या रहा है क्योंकि सिस्टीम.... प्रवेशता कैसे होती है ये समझ में ही नहीं आता, तो कौन घुसा है अंदर कौन आया है? वो सिंध में । कोलकाता में साक्षात्कार का पार्ट शुरू हुआ। कोलकाता में साक्षात्कार का पार्ट जैसे शुरू हुआ तब भी और ये आपको बतावे कि यह जो अपन के साथ जो चल रहा था ना कभी बाबा की शक्तियाँ आना, कभी कुछ थोड़ा अजीब हो जाना, ये 33 से चल रहा था। ठीक है, किससे चल रहा था?*** 33 से

साक्षात्कार होना, अचानक बैठे-बैठे उड़ जाना, बच्चे बोलते हैं बाबा को तीन साक्षात्कार हुए विनाश का, स्थापना का, ऐसी दुनिया का हम सब.....। बच्चे सिर्फ तीन ही होंगे? क्यों फिक्स हैं तीन? अपन को तो इतने हुए, गिनती ही नहीं हैं । हाँ बच्चों को जितना याद था, उसने पुस्तक में डाल दिया। जितना बुद्धि में आया डाल दिया। अपन की कहानी कोई और पूरी कैसे बता सकता है, वो तो अपन ही बताएंगा। इसीलिए सबसे पहले बाप है, सबसे पहले बुद्धि से यह पॉइंट जरूर निकाल दो कि मेरा बाबा इस सवाल का जवाब देगा तो मुझे निश्चय होगा। ये है मन की गलतफहमी और यह गलतफहमी बापको दूर ले जाएंगी । इतने समय से क्या अनुभव किया, क्या पाया, क्या प्राप्ति किया, क्या मिला, यह सोचो पर अब क्या मिल रहा है, अब मेरा आने वाला जीवन क्या कहता है। ***परिवर्तन ही परमात्मा का दूसरा नाम है* क्या? परिवर्तन ही... "परिवर्तन"... "परमात्मा" जिसके जीवन में परमात्मा की यादप्यार तार जुड़ा है, उसके जीवन में परिवर्तन की बहार आती है, और जब परिवर्तन होता है तब प्रत्यक्षता होती है । तीनों जुड़े "परमात्मा", "परिवर्तन" "प्रत्यक्षता" ठीक है । *परमात्मा आया परिवर्तन हुआ प्रत्यक्षता हो गई।*** ठीक है पहले यहाँ से प्लेन। बाबा कहते हैं प्लेन बुद्धि बनेंगे तो प्लेन में बिठाके ले जाएंगे। ठीक है ना । हाँ ,रही सवाल जवाब की बात बच्चे वो अपने पास अगला मिलन भी पड़ा है। नहीं मिलना हैं अगली बार? मिलना है? मिलते रहेंगे अब तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा किसको बजाना है। बच्चों को मिलकर बजाना है। है ना बाप साथ है, बड़ा आवाज करने के लिए, ढोल में इतनी ताकत भर देगा, थकेगा ही नहीं बजते, बजते, बजते, लेकिन ***साक्षात्कार का पार्ट कोलकाता में चला । धीरे धीरे, धीरे, धीरे फिर भी बिजनेस किया डील*** किया... (19.12.2020)

(9) एक भाई बता रहे हैं कि मुरली में ऐसे बताया है कि सिंध हैदराबाद में भी फर्रुखाबाद था, वहाँ आपका जन्म हुआ था...?

तो फर्रुखाबाद है... था क्या, अपन को सभ हिस्ट्री जो नाम ले लेकर... इसको क्या कहते हैं डुप्लीकेट कॉपी! है ना...!! ***जो चीज जहाँ थी, उसकी कॉपी करके इधर लेके आ गये। जो असली चीज थी उसको भूल गए जो दूसरी चीज थी उसको पकड़ के, इतना बड़ा कारोबार बना दिया।*** यही तो वंडरफुल बात है ना! दूसरे फर्रुखाबाद को भूल गए.....असली वाले को भूल गए डुप्लीकेट बन गए। (21.01.21)

(*10) मुरली में त्रिमूर्ति शिवजयंती बोलते हैं, अब जयंती तो साकार की होती है इसका मतलब है कि वह जो तीन मूर्तियां है, ब्रह्मा, शंकर और विष्णु तो क्या वह प्रैक्टिकल में नहीं होना चाहिए, जैसे महात्मा गांधी जयंती वो तो साकार होकर गए

हैं ना? तो यह ब्रह्मा, विष्णु शंकर त्रिमूर्ति शिवजयंती बोलते हैं। इसके पीछे का क्या राज क्या होना चाहिए? **

शिवजयंती और शिवरात्रि देखो दोनों शब्दों में बड़ा फर्क है। जयंती जिसका जन्मदिन होता है। अगर किसी सृष्टि पे कोई आत्मा इस शरीर में आती है तो क्या कहेंगे, जन्मदिन है। लेकिन शिव के लिए क्या कहेंगे? शिवरात्रि हैं और बच्चे जयंती का अर्थ यह है कि शिव जयंती यह तीनों कर्तव्य करके गए हैं। बाबा ने पहले भी ये क्लियर किया था कि ब्रह्मा के द्वारा सृष्टि पर ही स्थापना होती है। विष्णु के द्वारा पालना भी होती है और शंकर के द्वारा विनाश होता है। अच्छा एक बात बताएं। ***दोनों साकार में हो करके गए हैं, लेकिन शंकर के लिए साकार नहीं कहेंगे।सबसे बड़ा कारण यह है कभी भी आपने देखा शंकर कौन है सबसे पहले देखो शंकर है कौन? एक ड्रेस कपड़ा है! जब बाप सृष्टि को रचते हैं तो सूक्ष्म वतन को रचते हैं। उसमें तीन देवताएं रचते हैं। इसमें बड़ा क्यों कंफ्यूजन है? आप बच्चे कभी भी भक्ति मार्ग मैं भी ब्रह्मा और शिव को नहीं कहा गया... विष्णु और शिव को नहीं कहा गया... शिव और शंकर का गायन कहा गया है। आज भी भक्ति मार्ग में शिव शंकर बोलते हैं।*** ब्रह्मा शंकर नहीं बोलते या ब्रह्मा शिव नहीं बोलते... कभी विष्णु शिव नहीं बोलते। उनको क्या बोलते हैं? तो शंकर बाप समान!! बाप समान का अर्थ क्या है? शिव बाप समान अर्थात शिव शंकर ऐसे बोलते हैं। ब्रह्माशिव नहीं, विष्णु शिव नहीं, ***शिव शंकर अर्थात शंकर भी जन्म मरण के चक्कर से परे हैं। शंकर जो साकार में नहीं आए।***(04.11.2020)

(11) *तो अगर साकार में शंकर नहीं आए तो फिर हम ये जो बोलते हैं, कि शिव समान बनते हैं.... बाप समान बनते हैं.... तो समान बनने की जो प्रक्रिया है, वह शरीर में आकर पुरुषार्थ करके ही तो सामान बनेंगे....!!*

बिल्कुल नहीं बच्चे शिव समान कैसे बन सकते हो...!! ***शिव समान ऐसा नहीं, क्योंकि शिव के अंदर क्या है? हम शिव की शक्तियाँ हैं और जो शिव परमपिता परमात्मा में गुण है, ऑटोमेटिकली वह आत्मा में गुण है। वह है पर उसको इमर्ज करना है।*** समान बनना....बाप क्या कहते हैं? समान किस को कहते हैं? जो बिंदु पहले से ही बिंदु है। बाप भी बिंदु है समान तो पहले से ही है ना! समानता किसको कहेंगे जो गुणों में समानता होती है। और जो शंकर हैं, वह अपनका सब का बड़ा भाई है। बड़ा भाई का अर्थ... बच्चे कभी भी शंकर को ऐसे ड्रेस में नहीं दिखाया है। ऐसे कपड़ों में नहीं दिखाया है। कभी नहीं दिखाया है.... आपने देखा? (देखा तो नहीं है लेकिन शंकर को अर्धनग्न रूप में दिखाया है।) ***बिल्कुल अर्धनग्न इसलिए कि भई लोगों की बुद्धि ऐसे ना हो..., इसलिए क्या कहते हैं कि उसको देह रूपी कपड़ा नहीं मिलता। क्योंकि उसके शरीर पर ऐसा**

ड्रेस नहीं है तो, उसको इस साकार सृष्टि पर देह रूपी कपड़ा नहीं मिलता।* और साइंस में जो बना रहे हैं, केहते है हम क्या करें, यह सब बॉम्ब्स बन रहे हैं। कोई हमें प्रेर रहा है, कोई प्रेरक है जो हमारी बुद्धि में टचिंग दे रहा है और हमारे द्वारा ये बन रहे हैं। यह भी इस कलयुग में ***जब शिव पिता शंकर अर्थात शंकर के उस शरीर में आते हैं तो प्रेरणा आती है। अब प्रेरणा कहाँ से आएँगी?*** आज मेजॉरिटी, शंकर की भक्ति हो रही है, मेजोरिटी आत्माऐं उसकी पूजा कर रही है।(04.11.2020)

(12) बाबा बाहर के जो धर्मपिता हैं वो कहते हैं कि ब्रह्मा का जन्म होगा ही नहीं, द्वापुर में होगा ...तुम लोग भटक रहे हो।*

वह धर्म पिता है ना... परमपिता तो नहीं है, जो भविष्यवाणी करे की ब्रह्मा बाबा द्वापुर में जन्म लेगा। वह धर्मपिता है ना, क्योंकि वह खुद द्वापुर में आते हैं। अच्छा एक बात बताओ बच्चे जो बोलते वो द्वापुर में आयेंगा। जो खुद है ना वह अपनी सच्चाई बताते हैं पर नाम अपन का लेते हैं। है ना सच्चाई अपनी बताते हैं पर नाम इधर लेते हैं.... क्योंकि वह खुद द्वापर में आएंगे। तभी तो द्वापर द्वापर का रट्टा लगा के रखा है। अब वह तो धर्मपिता उधर सतयुग में क्या करने आएंगे? जब परमपिता ही नहीं आ सकता तो धर्मपिता क्या करने आएगा बताओ? बाबाने सबको अच्छा अच्छा रोल दिया था...बच्चे बजाओ, लेकिन बच्चों ने क्या किया? अपना बुद्धि से सब कुछ लिख डाला। आज कितना पाप कर्म हो रहा है आपको पता है ना। आप गए हो, देखा होगा...सुना होगा**... *अंदर का तो बाप जानते हैं। चर्चा करनी भी गलत है। इतना पाप कर्म, इतना पाप कर्म!! क्या सतयुग में वो राजा बनेगा?? क्या बनेगा या क्या कर रहा है? हर एक क्या कर रहा है...अपना-अपना देखो!! जो धर्मपिता बोलते हैं - मैं प्रजापिता हूँ.... मैं प्रजापिता हूँ.... मैं प्रजापिता हूँ। किस प्रजा का पिता है?*** पूछो... एक बार बस बापके सम्मुख ले आओ। एक बार ही काफी है, फिर अपन जो पूछेंगे वह बताएंगे तो ठीक...., फिर मानेंगे कि आप प्रजापिता हो। कैसे हो सकता है? ***ड्रामा को बिल्कुल ही पलटी कर दिया है।* इसलिए *द्वापरयुग में आज जिन बच्चों को उन्होंने भटकाया है, वही उनकी चीराफाड़ी करेंगे फिर। अभी भी करेंगे तब भी बहुत ज्यादा करेंगे* ।*** (23.10.20)

(*13) पार्टी के हेड वीरेंद्र भाई ने भटकाया है बच्चों को... 22 साल हम लोग भी गए हैं वहाँ पर बाबा। हम लोगों का क्या शूटिंग हुआ बाबा*

आपका शूटिंग ये होगा कि आप देवी कुल की आत्मा हो और वापस आ गई। आपका यह शूटिंग है, और ***सबसे बड़ा है कि भल गए। कहते हैं ना कुछ-कुछ आत्माएं दूसरे धर्म में कन्वर्ट हो गई थी। कुछ भी कारण लगाओ.... लेकिन भाग्यवान वो जो वापस आ***

जावे।* बच्चे आपके जैसी बच्चियाँ बहुत रो रही हैं। निकलना चाहती है पर निकल नहीं पा रही है। **बहुत पर्दा पर पर्दा है वहाँ पर*** पर्दे पर पर्दा, पर्दे पर पर्दा और आधार क्या ***वह जो साकार की पुरानी मुरलियाँ उन मुरलियों पर सब के ऊपर पर्दा डाला हुआ है।तभी तो खुद नीचे जाएगा ना, क्यूँकि ग्लानी करके उसमें वजन ज्यादा हो जाएगा*** । तो रसातल में जाता जाएगा... जाता जाएगा.... जाता जाएगा। तो ग्लानी ही क्या होंगी पतन का कारण। (23.10.20)

(14) *बाबा साकार में रामकृष्ण का बहुत ज्यादा गायन है। तो कृष्ण तो आप (ब्रह्मा बाबा वाली) आत्मा है तो राम का भी अलग से कोई साकार में व्यक्ति है?*

देखो बच्चे कहते हैं ना गीता माता से ही सब पैदा होतें हैं....गायब है ना अब! जिसने भी जो भी कहा है कि सतयुग में श्री कृष्णा, और त्रेता में राम! जो फर्स्ट है, जो फर्स्ट श्री कृष्णा और फर्स्ट राम दोनों एक ही है। पर जो सेकंड वाले बनते हैं, फिर वह सब उसी से ही जन्म होता है। जैसे अब उसका जन्म कहाँ से हुआ। उस गीता से हुआ। उससे पहले कौन जानता था उसको। वह जो इतनी सारी पोथी लेकर गया, कहाँ से लेकर गया। वही से जन्म हुआ। रास्ता तो सही था पर आगे चलकर टेडा मेडा कर दिया। तो जन्म कहाँ से हुआ? यही से ही हुआ! कहते हैं ना? एक राजा अगर लायक है तो कहाँ -कहाँ उसके बच्चे भी नालायक निकल पड़ते हैं। है ना यही तो फिर त्रेता से फिर द्वापर निकलता है। अब क्या कहेंगे कुछ कुछ नालायक भी हैं। अब घर में अलग दो चार बच्चे पैदा हो जावे, कोई तो एकदम बहुत अच्छा होगा। कोई एकदम नालायक होगा जो माँ बाप को भी मारता है।(23.10.20)

(15) ऐसी आत्मा बाबा त्रेता तक भी आ जाएंगी?***

त्रेता के अंतिम वाला राम। त्रेता के आदि वाला राम नहीं। (फैल होने वाला?) त्रेता के अंतिम वाला एकदम लास्ट वाला राम जो फेल होने वाला राम है। फिर वह थोड़ी राजाई मिलेगी इतनी। फिर द्वापर में तो फिर बड़े-बड़े डंडे निकलेंगे। उन्हींके ही जिन्होंने इधर उधर भटकाया बच्चों को वही निकालेंगे। क्यों नहीं मारेंगे बताओ? इसीलिए यह रास्ता ही गलत दिखाया। हमेशा सोचो जो उनके शरीर में आई उनको कुछ नहीं होंगा। होंगा किसको? जिसके शरीर में आई। यही होंगा ना!! धर्मपिता एकदम क्या कहेंगे, प्योर सोल है। वो आयेंगी..... अपना कार्य करेंगी और लोग किसको मारेंगे? जो उसके अंदर आ करके निकल गई उसको... या जिसके अंदर आयी उसको? (जिसके अंदर है उसको...) तो अभी भी मारेंगे.... फिर भी मारेंगे। उल्टा रास्ता दिखाने वाले का क्या होता है देखो? (पनिशमेंट तो मिलेगा!!) मिलेगा अभी आप बच्चों की दृष्टि के सामने ही मिलेगा, क्योंकि बाप आ गया है, ****कहते हैं ना भक्ति मार्ग में श्री कृष्णा आया और 16108 रानियों**

को मुक्त कराया। किसकी जाल से? (जरासंघी कि जेलसे)** तो सारी कहाँ -कहाँ फँसी हुई है। अब आया है.... अपना बाबा आया है, अपन आया है। सबकी मुक्ति । अब देखना...!! धीरे-धीरे नहीं कहेंगे, तीव्र गति से कहेंगे, सब दौड़े दौड़े आएंगे। आएंगे ना बहुत जल्दी आएंगे। (कैसे होंगे बाबा?) कैसे नहीं होंगे यह पूछो!!(वहाँ ग्रुप कोई जाएगा...या?) भल उधर ही बैठकर बाप को कुछ कराना पड़े पर निकाल कर ले आएंगे ***क्योंकि बाबा के जैसे बच्चे गए हैं ना, वैसे लौट के भी आएंगे। आ रहे हैं आएंगे भी। ठीक है बच्चे। (जी बाबा)*** बेफिक्र हो जाओ। हाँ यह है बाबा एक तार खींचेगा और सबकी उधर से तार टूटेगी। कितनी बच्चियाँ तो निकल गई... कितना और निकल जाएंगी , ठीक है। आ गई.... पर जो वो निकल गई है, वह भी धीरे-धीरे आएंगी। अब कोई कहते हैं प्रजापिता या कृष्णने मुक्त कराया। अब आप बताओ बच्चे.... कहते हैं, अगर बाबा अंतिम समय में भी अभी किसी मेल के तन में आते फिर मुक्त कराते तो क्या होता? भई आप भी वही काम कर रहे हो भई आप भी यही करेंगे। तो उधर जाओ उधर जाओ क्या फायदा!!!***इसलिए (फीमेल का तन) अब बताओ कौन किसे साथ क्या करेंगे इसलिए बेफिक्र! कराएँगे तो अपन ही पर सोच समझ के। बाबा ने जो ड्रामा बनाया है एक्यूरेट बनाया है ।*** अगर इधर की जगह कोई और होता मेल होता तो भाई आप भी यह कर रहे हो, अपन भी दोनों भी यह कर रहे हैं क्या मतलब!! क्या गेरंटी । अब सौ परसेंट गारंटी है। अब क्या होगा अब तो आना ही पड़ेगा? समझ गए बच्चों!! ***बाबा त्रेता के अंत में कितने राजाएं होंगे।*** फिर तो बहुत हो जाएंगे बच्चे। राजाएं अपना-अपना कहाँ कहाँ चले जाएंगे। कहाँ कहाँ दूर दूर तक फैल जाएगा। अंत में चारों तरफ काफी राजायें हो जाएंगे, फिर परिवर्तन का समय होंगा। पलटी होंगा तो जो राजायें जहाँ थे, वहीं रुक गए। दूर-दूर गए थे टापू पे। वही गुम हो गए और फिर ***त्रेता और द्वापर के जो बीच का संगम है, उसमें सृष्टि परिवर्तन होंगा । क्या कहते हैं सोने की द्वारिका नीचे चले गई। यही कहते हैं ना !!*** बनी बनाई बन रही मतलब सोने की द्वारिका जो बच्चों आपके सोने के महल थे ना वह सब नीचे बैठे हैं। नीचे कहाँ बैठे हैं, सेफ है, नहीं तो सब उसको भी लूटके ले जाते। वहाँ तो जा ही नहीं पाएँगे। (23.10.20)

(16) तो बाबा अंत में क्या शंकर का साक्षात्कार होता है क्या सभी को?

कहते हैं ना शिव की बारात में कौन जा रहे थे? भोले भोले बच्चे!! ***भोलेनाथ की बारात में सब जा रहे थे। चींटी, कीड़े मकोड़े अपनी -अपनी संगत में... सब जा रहे थे यह शिव की बारात है। जब परम धाम में शिव की बारात जाएगी तो कौन-कौन जाएगा? कितना अच्छा भक्ति मार्ग में कितना अच्छा टाइटल दिखाया है। जब शिव की बारात जाती है तो हर कोई जाता है। छोटे से छोटा, छोटे से छोटा मच्छर तक भी जाता है। छोटी-छोटी चींटी जाती है। छोटे से छोटा जीव जाता है, जंतु जाता है, इंसान जाते***

है, सभी जाते हैं। कोई रुकता है? पर सेक्शन सबका अलग होता है।* सेक्शन में जाते हैं। सब की यात्रा होती है और सबसे आगे.... देखो.... दिखाते भी किसको है शंकर जी को दिखाते हैं। हाँ भई उनके द्वारा ही तो लेकर जाएगा ना? वही जब निबटाएंगा तो लेकर जाएगा । ***अब निपटाने वाला कौन? डमरू बाजे! ऐसा डमरु बजाएगा और फिर लेकर जाएगा तो देखो.... एक्यूरेट दिखाया है सब कुछ।*** वह भोलेनाथ की बारात में सब जा रहे हैं। और शंकर के द्वारा ही दिखाया है। कितना सब कुछ क्लियर दिखाया है। या विष्णु के द्वारा थोड़ी दिखाया है? ब्रह्मा के द्वारा थोड़ी दिखाया है? शंकर के द्वारा ही दिखाया है। सभी को इसीलिए इस समय वर्तमान समय उसकी महिमा बड़ी है। क्योंकि वही... वही सब का साक्षात्कार!! ***क्योंकि सबको बाराती बनाने वाला वही है। सब को हर चीज से मुक्त करने वाला।***(14.09.2020)

(17) बाबा ये शंकर को यह जो अलंकार दिए हैं चंद्र कहीं कुछ ऐसे बताते हैं...तो यह क्या है?

बच्चे देखो यह भी एक लंबी कहानी है इसके बारे में अच्छे से चिट चैट करेंगे, अलंकार दिए हैं। उनका भी अर्थ है। अलंकार कहाँ कुछ कहाँ कुछ दिया है। हर चीज का अर्थ है। अपने ज्ञान मार्ग में उनका अर्थ ज्ञान से निकाला है और पूरे विश्व के हिसाब से उसका अर्थ अलग है। वही बाप कहेंगा, कि हर एक चीज का दो अर्थ है ***। हर एक अलंकार का भी दो अर्थ ही है।*** पूरी सृष्टि के हिसाब से भी और वर्तमान समय जो बाप ने बताया है। ब्राह्मणों के हिसाब से भी है। दोनों के हिसाब से। ****सबसे पहले कहते हैं डमरु। डम.. डम... डम. डम... डमरू बाजे। दुनिया में पहले "मेरा बाबा आ गया".... "मेरा बाबा आ गया"। ऐसा डमरू बजाएंगा। डमरू क्यों बजाते हैं आज कल की दुनिया में? क्यों? जागने के लिए अपनी तरफ फोकस करने के लिए, इसीलिए डमरू बजाते हैं। ठीक है। आज के संसार में। कहते हैं ना ज्ञान ऐसा कि पूरे विश्व में चलेगा। "ओ...म...”। चलेगा ना "ओ...म”!!*** यह डमरु बज गया। बस डमरु बज गया। तो डमरू कौन बजाया? मेरा बाबा बजाया। तो क्या कहेंगे? "ओम" डमरु बजाने वाला बाबा आ गया। डमरू कोई ना कोई तो बजायेगा ना!! तो डमरु डमरु थोड़ी बजेगा? बजाने वाला कौन है? मेरा बाबा। तो जब ओम का उच्चारण होंगा तो क्या कहेंगे? मेरा बाबा आ गया। बाबा कहते हैं ना... मीठा बाबा कहते हैं ना... प्यार वाला बाबा। मेरा शिव भोला भंडारी आ गया। है ना ऐसे... ऐसा डमरू बजेगा!! और भी बहुत सारी चीजें हैं बच्चे! समय प्रति समय बताते रहेंगे है ना**?*बाबा ये शंकर जी का जो प्रतिमा बनाते है, पत्थर कि या फोटो में...तो क्या ऐसा साक्षात्कार होता है?*** देखो बच्चे साक्षात्कार होता है मिलता जुलता। जो साक्षात्कार में होता है वो रियलिटी में यहाँ बना ही नहीं सकते हैं। क्योंकि साक्षात्कार का रोल जो होता है वह कुछ ना कुछ... कुछ ना कुछ... हाँ ***सेम नहीं कहेंगे लेकिन**

मिलता-जुलता साक्षात्कार होता है, तो उस हिसाब से बना देते हैं। और उसको बना करके फिर उसकी पूजा करते हैं।* हैंना !अभी अगर अपन कहेंगा हमको साक्षात्कार हुआ लक्ष्मी नारायण का। तो क्या कहेगा ऐसे प्रतिमा नहीं बना सकता कोई लेकिन क्या कहेंगे.... अपना ***एक कलाकार अपनी पूरी जान डाल देता है उस प्रतिमा को बनाने में, लेकिन कुछ तो उसको देता ही है ना, कुछ तो ऐसा रूप देता ही है ना। संपूर्ण रूप से तो नहीं।*** सतयुग की चीजें इस कलयुग में हो ही नहीं सकती। क्योंकि वह तत्व और इस तत्व में बड़ा फर्क है । वह रंग और इस रंग में बड़ा फर्क है। उसकी चमक में और इस चमक में बड़ा फर्क है । तो कैसे बन सकती है !! जब वह तत्व ही नहीं है तो वैसी प्रतिमा बन ही नहीं सकती।इसीलिए.... लेकिन जितनी बनाते हैं, जितनी अपने हिसाब से बनाते हैं.... उतना तो बनाते ही है ना! बस आज के लिए इतना ही काफी है, समझ गए । (14.09.2020)

(*18) मुरली में है कि संगम युग में जो भी यादगार है, चरित्र के आधार पर चित्रण किया गया है और उसके आधार पर गायन पूजन हुआ है... तो अगर प्रैक्टिकल में कोई पार्ट प्ले नहीं हुआ तो ये भक्ति मार्ग में यह मेजोरिटी आत्माएं यह गायन पूजन क्यों कर रही है?*

बच्चे प्रैक्टिकल में ये पार्ट अभी हो रहा है। देखो बच्चे यह 100 वर्ष का ***संगम युग है, इसमें हर एक आत्मा की शूटिंग हो रही है। बाबा ने अपन ने अभी कहा था कि गणपति कौन है... जिसने बाप के प्यार की खुशबू को पहचाना और आ गया। उसको लंबी नाक दे दी। जिसने बाप के ज्ञान को बैठकर के अच्छे से सुना... उसको बड़े कान दे दिए। अपनी बुद्धि के अनुसार सोचो... ऐसा कब हुआ है क्या कि किसी का ऐसा नाक हो। किसी के बड़े-बड़े कान हो और वो मनुष्य आत्माएं हो। प्रैक्टिकल में आए बच्चे !*** भक्ति मार्ग में तो अपन जाते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल में बाप बैठे हैं। प्रैक्टिकल में यह जो गायन है भक्ति मार्ग में यह आप बच्चों का ही गायन है। और रही शंकर की बात, बच्चे, ड्रामा अनुसार पार्ट खुल रहा है और आपने कहा साकार में होकर के गए तो बाप पूछना चाहते हैं। ***इस सृष्टि पर अगर साकार में शंकर है...अगर वह विनाश करता है, अगर वो आत्मा है... तो सारा पाप उस पर जाएगा बाबा ने क्या कहा कोई एक निमित्त नहीं बनेगा विनाश के, अगर एक आत्मा निमित्त बन गई तो क्या होगा। सारे सृष्टि का पाप उस पर चढ़ेगा।*** तो अब यह बताओ अगर शंकर साकार में है भी तो जब विनाश का महा विकराल रूप होगा तो कौन बनेगा निमित्त?? साकार शंकर बनेगा। और सारा पाप उसपर चढ़ेगा तो फिर कैसे हो सकता है? कैसे हो सकता है आप बताएं क्योंकि जिसने जन्म लिया, अब चाहे वह कोई भी हो, कोई भी हो, चाहे वह शिव पिता ही क्यों ना हो, जिसने जन्म लिया उसकी मृत्यु निश्चित है। और जिसने जन्म लिया वो

कर्म भोग के चक्कर से मुक्त नहीं हो सकता। और जिसने जन्म लिया वो इस सृष्टि पर आकरके पाप कर्म ना करें... धीरे-धीरे अवस्था ना गिरे ऐसा हो नहीं सकता।(04.11.2020)

(19) *बाबा तो जो निराकार शिव है तीन मूर्तियों के द्वारा.... बोलते हैं तो वो 3 मूर्तियाँ तो सरकार में चाहिए ना!!*

तो है ना..!! कौनसी तीन मूर्तियां? ****तीन मूर्तियाँ हो गई है ना आदि, मध्य, अंत!!ब्रह्मा बाप"... "शोभा बच्ची" (गुलज़ार दादी) अंतिम समय आ गया। ये तीन मूर्तियों का गायन है।**तो जो ब्रह्मा, विष्णु शंकर है वो...??*वो भी तीनमूर्ति उनका भी गायन है। पार्ट देखो साकार की जो तीन मुख के द्वारा.... ***बापने कहा, अगर शंकर के स्थान पर सरस्वती को बिठा दिया जाए तो सेहेज हो जाए। शंकर.... सरस्वती! शंकर के स्थान पर सरस्वती बैठ गई ना!*** समय बड़ा तेजी से दौड़ रहा है और आप अपनी दृष्टि से बहुत कुछ देखने वाले हैं। अब एकदम से तो सबकुछ नहीं दिखाया जाएगा ना!! जब इतना बाप ने दिया है तो धीरे-धीरे घड़ी-घड़ी सबकुछ मिलेगा... लेकिन बाप ये कहना चाहते हैं जो विनाशकारी है, बाप अगर किसी भी बच्चे के द्वारा कोई भी ***आप बताओ बच्चे साकार में कोई भी एक आत्मा विनाश के निमित्त बनेंगी तो सारा पाप उस पर जाएगा और बाप अपने बच्चों से क्या करता है? प्यार!!!*** और ऐसा कोई बच्चा पैदा नहीं करेगा, ऐसा कोई एक पैदा नहीं करेगा जो पूरे कुल का जो पूरे विश्व का विनाश कर सके। और वह सृष्टि पर तो पैदा बिल्कुल नहीं करेगा। ***इसीलिए शंकर का। साकारी शरीर नहीं है। शंकर का आकारी सूक्ष्म शरीर बनाया है। और शिव पिता आएगा उसी में ही वही ड्रेस पहनेगा और सबकुछ हो जाएगा।*** और चला जाएगा.... फिर निकल जाएगा। इसीलिए कहते हैं। ***शंकर के कंठ में ही विष दिखाते हैं कि इस पूरी सृष्टि का समाप्ति अर्थात बीज बचाकर के कंठ को इधर, सारे पाप को कहाँ अटका देता है? जितना भी हुआ सब कहाँ अटका दिया। कंठ में अटका दिया। पेट में तो नहीं दिखाया, कंठ में ही दिखायाना!! यह बाप का कर्तव्य है.... इसीलिए शंकर का पार्ट वंडरफुल है।*** अगर ज्ञान को गहराई से समझेंगे तो बहुत अच्छे से समझ में आएगा। अच्छा बाप आते थे, कहते थे - "बच्चे बाप थोड़ी किसी का विनाश करेंगा...नहींतो सारा पाप बाप पे ही चढ़ जावे।" कहते थे ना कौन से उसमें कहते थे? जब बाप पढ़ाई पढ़ाते हैं। बैठकर वर्सा देते हैं ... ब्रह्मा के द्वारा स्थापना जब होती है, तो उसके द्वारा विनाश तो नहीं करायेगा ना? तो उस समय तो क्या है, वो बाप है!! और ***बाप कभी अपने बच्चों का विनाश नहीं कर सकता।*** विष्णु के द्वारा जब पालना होती है तो वह पालना ही करेगा। पालना करते करते बच्चे का गला थोड़ी काटेंगा नहीं काट सकता ना... क्योंकि वो उस समय पालनकर्ता है। पालन कर रहा है। अब यह जो मिटाने का कर्तव्य है, यह न पालनहार कर सकता है ना

वो बाप कर सकता है। तो कैसे साकार में आ सकता है!! साकार में अगर जन्म हो जावे तो सारा पापकर्म उसपे चढ़ जावे। (04.11.2020)

(20) तो जैसे बाबा तीन मूर्तियों का दिव्य कर्तव्य है। तो उसका टाइम ड्यूरेशन भी दिया गया है। जैसे ब्रह्मा के 30- 33 साल। शंकर के 30 - 33 साल और विष्णु के 30 - 33 साल तो 100 वर्ष के संगमयुग में इन तीन मूर्तियों का तो अलग-अलग कार्य होना चाहिए

बच्चे 30 - 33 साल नहीं!! देखो आप घर जब बनाएंगे, स्थापना करेंगे तो उसमें क्या लगेगा? क्या लगेगा? (समय लगेगा) बिल्कुल जब आप इस भूमि को खरीदेंगे तो समय लगेगा कि नहीं लगेगा। फिर इसमें आप नींव भरेंगे क्या लगेगा? (समय लगेगा) अच्छा ये पूरा घर बन गया.... इसको सेट करने में क्या लगा । (समय लगा) और रहने में भी कितना वर्ष लग गया। 30, 40, 50 लग गया ना!! अब उसको तोड़ना है तो बताओ कितना समय लगाओगे? (कम समय लगेगा) बस फिर...!! ***विनाश में समय नहीं लगेगा। तोड़ने में समय नहीं लगेगा.... पर सृष्टि को जोड़ने में समय लगता है।*** बच्चे विनाश करने में ज्यादा समय नहीं लगता। पालन करने में स्थापना करने में लगता है! ***अगर आप अपने हिसाब से 30 -33 साल सबको बांट देंगे तो यह ड्रामा नहीं कहेंगे।*** ये ऐसा नहीं हो सकता कि ब्रह्मा को भी इतना वर्ष लगेगा। विष्णु को भी इतना वर्ष लगेगा और शंकर को भी इतना वर्ष लगेगा!! तो सुख कहाँ गया फिर?? ***यह हमने नहीं बांटा है बाबा यह हमने कहीं पढ़ा है। एडवांस पार्टी प्रैक्टिकल पार्टी के रूप से....***पढ़ा है ना बच्चे! अच्छा एक बात बतावे एडवांस पार्टी में जितना सुनाया जाता है, जितना भी उसमें सुनाया जा रहा है। वह पूरा सत्य है? मुरली को छोड़के। जितना भी मुरली उन्होंने रखा है। अब जो जितनी मुरलियाँ सुनाई जा रहीं है उसमें से कितने अक्षर साफ हैं। कितने साफ हैं जब तक अपन कोई बात को बुद्धि में नहीं बिठाएंगे तब तक पूरी लाइन को कैसे समझ सकते हो? ***उसमें अगर एक लाइन ऐसी लिखी गई तो चार लाइन नीचे साफ है। तो बाप ऐसे थोड़ी वह एक ही लाइन बोल कर गया है। उसका राज़ भी तो नीचे बताया होगा। उसका कारण निवारण भी तो नीचे दिया होगा। पर वो साफ है। वह नहीं है। तो अधूरा ज्ञान हमेशा रास्ते को उल्टी तरफ लेकर जाते हैं। इसीलिए कभी भी अधूरा ज्ञान बुद्धि में बिठाना नहीं चाहिए।*** अधूरा ज्ञान नहीं पूरा ज्ञान लेकर आओ, पूरी वाणी लेकर आओ, पूरी लाइन लेकर आओ। बाप हर एक सवाल का जवाब देने के लिए बैठा है, कहीं नहीं जाएगा। चाहे 4 दिन बिठाकर रखना, बाप बैठा रहेगा क्योंकि बाप वर्तमान समय पूरा ज्ञान देने आया है। अधूरी लाइनें नहीं। ***एक लाइन सुनाई चार लाइने गायब...!!चार लाइन सुनाई 10 लाइन गायब!! यह ज्ञान बाप नहीं सुनाता है। बाप सुनायेंगा तो पूरा सुनाएंगा।*** आज वो जो भी सुना रहें हैं लेकर आवे बाप गेरंटी करता है। एक नहीं सौ परसेंट, हजार परसेंट

गारंटी करता है सब बाप बैठ कर बताएगा। सब बताएंगा क्योंकि भल पहले अपने बाबा ने वो पावर नहीं दिया, लेकिन वर्तमान समय बाबा ने मेजॉरिटी शक्तियों को धारण करा दिया है। (04.11.2020)

(21) शंकर की तीसरी आँख खुलते ही विनाश होता है। इसका अर्थ क्या?

बुद्धि रूपी नेत्र खुलता है है तो सब विकारों का विनाश हो जाता है, यही सुनाते हैं ना। पर वो तो शंकर के द्वारा थोड़ी खुलता है। वो ब्रह्मा के द्वारा खुलता है तो उनको बीच में क्यों लेके आए? ज्ञान किसके द्वारा मिला? (ब्रह्मा के) दिव्य बुद्धि नेत्र किसके द्वारा खुला... (ब्रह्मा के) तो फिर इसमें रोल किसका? शंकर का है ही नहीं। तो ***खिचड़ी पका दी ना। जिसको जो कर्तव्य मिला उसको तो निकाल दिया।जिसका रोल ही नहीं बजा अभी तक, शुरू ही नहीं हुआ उसके बदले बुद्धि रूपी नेत्र... भई शंकर को बुद्धिरूपी नेत्र खोलने की क्या जरूरत है, वो तो है ही आकारी देवता उसको क्या जरूरत है बताओ।*** जरूरत है क्या? जरूरत किसको है? पहले अपन को उसके बाद फिर सभी बच्चों को। ***जब बाबा इधर आते हैं, शुरू में स्थापना में तो बुद्धिरूपी नेत्र पहले अपनका खुलता है। उसके बाद फिर सभी बच्चों का, तो ये किसके लिए गायन है?*** (ब्रह्मा के लिए) तो शंकर को क्यों बैठाया कि इनका कर्तव्य है। एकदम अब तो कहेंगे ज्ञानी बच्चों से ज्यादा भक्ति मार्ग वाले बच्चे अच्छे हैं। वास्तव में सही अर्थ क्या है... और ये सत्य है कि जब शंकर का तीसरा नेत्र खुलता है तो विनाश की ज्वाला निकलती है, ये सत्य है शतप्रतिशत सत्य है ये... क्यों, ***क्योंकि जब शिव परमपिता परमात्मा शंकर की भृकुटि में आते हैं तो बनता है महाकाल और जब वो महाकाल का तीसरा नेत्र खुलता है तो सृष्टि महाविनाश की तरफ जाती है। मतलब जब शिव परमपिता परमात्मा शंकर में आएंगे, उनको धारण करेंगे तो विनाश की महाविनाश की शुरुआत होगी। तो ये सत्य है ना इनका रोल इतना ही है, एक्यूरेट है क्योंकि इनके दो नेत्र भल है, भल पूरा शरीर है पर किस काम का नहीं है।*** काम का कब होता है,(जब बापकी प्रवेशता होती है) अपनको भी देखो साधारण कोई नहीं जानता नहीं जानता कौन जानता था? हाँ भाई एक जोहरी है, अच्छे गहने बनाता है अच्छा सच्चा सच्चा सोना देता है सच्चे हीरे की दुकान है अच्छा है, ऐसे बोलते थे ना... तो जब अपना बाबा आया तो उसने एक पेहचान दिया जो पूरे विश्व में कहा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची गई।.....अब आ जाओ शंकर पे इनका सबसे बड़ा रहस्य क्या है, ***वो एक पुतले की तरह बैठे रहते हैं, तपस्या में लीन दिखाते हैं ना एकदम पुतले की तरह। किंतु जब सृष्टि पे बहुत पापाचार भ्रष्टाचार बढ़ता है तो शिव परमपिता परमात्मा वो स्वयं जब इनको धारण करते हैं तब ये बनते हैं शंकर से और शिव से भी ऊपर "महाकाल"!*** "रूद्ररूपधारी"!! तब इनको कहा जाता है "महाकाल"! फिर इनके द्वारा होता है "महाविनाश"! (बाबा ये प्रकृति

का हेल्प लेकर ही होता है ना...?) देखो जब एक माता पे अत्याचार होता है तो पिता क्या करता है? ये सोचना! प्रकृति का हेल्प नहीं। प्रकृति क्या है जब ये महाकाल बनता है तो प्रकृति महाकाली का रूप धारण करती है। दोनों ही एक दूसरे के साथ बने हैं। क्योंकि आज सृष्टि पे कितना पाप...भ्रष्टाचार... हो रहा है तो देखो उसके बिना तीनों कुछ नहीं है। ***(यहाँ साँप देना है ना...??)*** हाँ भल देना है, देना तो पड़ेगा ना क्योंकि ***इसका भी अर्थ है कि इन्होंने! विष धारण किया पूरे विश्व का, कहते हैं ना शंकर ने सागर मंथन में जो विष निकला वो पी गए। अगर कोई सृष्टि के मनुष्य पी जाते तो क्या बन जाते?*** वो तो सदा काल के लिए समाप्त हो जाते, खत्म हो जाते सृष्टि नष्ट हो जाती। ये गायन है, इसका कारण जानते हो क्या है? कि महाविनाश का जो विष है जो पाप है शिव परमपिता परमात्मा इसके द्वारा पीते हैं। अगर कोई और उस विनाश के निमित्त बने तो उसका अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा इस सृष्टि के मनुष्य आत्मा का ***इसलिए दिखाते हैं विष का प्याला इन्होंने पिया अर्थात पूरे महाविनाश का जो विष है जो जिम्मेवारी है, वो इन्होंने अपने अंदर धारण किया। इनके द्वारा शिव परमपिता परमात्मा ने इसलिए कंठ में क्या दिखाया है, नीलकंठ दिखाया है*** । अगर इस विनाश के... कहते हैं ना बाप विनाश नहीं करता, पालन करता है। हाँ पर कराता है इसके द्वारा जितना भी लेप छेप जितना भी सब कुछ है, सब कुछ इसी पे ही चढ़ता है और इसको वहीं पर सूक्ष्म वतन में छोड़ करके अपने परमधाम की यात्रा पर चलता है। इसलिए ये कभी सृष्टि पर जन्म नहीं लेते। अगर जनमकर्ता हो तो विनाश करता बने तो सारा पाप इसपे चढ़ जावे। ***ब्रह्मा सो विष्णु बनके सृष्टि में आते हैं, और सिर्फ शंकर सूक्ष्म वतन में रहते हैं। बाबा कहते हैं मेरे दो बच्चे हैं पक्के। एक ब्रह्मा सो विष्णु बन गया। एक शंकर । दो बच्चे हैं और बच्चे बार-बार एक बच्चे को भूल जाते हैं, जबकि वो सबसे बड़ा है। क्या है? सबसे बड़ा है***। (27.02.2021)

(*22) तो विनाश के समय क्या शंकर सूक्ष्म शरीर लेकर आते हैं नीचे?*

इनका कुछ नहीं है, कुछ है ही नहीं, ये एक तरह से एक पुतला है। ***सूक्ष्म वतनवासी आकारी देवता इनको चलाने वाला शिव परमात्मा है। शंकर नहीं आते। शिव परमात्मा इनके द्वारा विनाशकर्ता बनते हैं।*** समझ में आया। शिव परमपिता परमात्मा इनके द्वारा इनके कपड़े को धारण करके... छोटी सी बात है बताते हैं, मान लीजिए अभी आपको मालूम है कि ये ड्रेस पहनके जाएंगे तो हलचल हो जाएंगी तो आप क्या करेंगे। सारे कारनामे बुरखा पहनके जाओ कोई नहीं पेहचानेंगा और सारे कारनामे करके आ जाना। समझ में आया? नहीं समझ में आया? अगर अपने वेश में जाएंगे तो मारना शुरू कर देंगे। अच्छा इसने काम बिगाड़ दिया। भले क्या भी अर्थ है... भले कुछ भी है। अपने ओरिजिनल स्वरूप में जाएंगे तो बोलते हैं ना... पहले ही बोलते हैं... हे भगवान तू कभी

मिलना मैं तेरे को छोडूँगा नहीं। तेरे को छोडूँगा नहीं, कई टुकड़े करूँगा अगर मिल गया किसी दिन ऐसे ऐसे बच्चे हैं जो अपने बाबा को ऐसे कहते हैं। वो कभी मिल गया ऐसे तो क्या करेंगे बच्चे सोचो, ***इसलिए वो क्या करता है, अपना कर्तव्य ऐसी पोशाक पहनता है और सारे करनामें कर देता है। सूक्ष्म में वो...।*** एक रहस्य है जो अभी रहेंगा वो अपन खोलेंगा नहीं अभी तक बिल्कुल नहीं, क्योंकि ये रहस्य बहुत बड़ा है, भल बच्चे सुनेंगे तो हलचल में आएंगे भल आवे पर ये जो शंकर का रहस्य है, हर बार खोलेंगे और हर बार कुछ छुपायेंगे बिल्कुल (बाबा अभी है कुछ छुपा हुआ?) बिल्कुल! जैसे अपना बाबा हर बार पोटली खोलता है, हर बार कुछ लेके चला जाता है, हर बार कुछ सेम....दोनों...। इसके बारे में जितना जानोंगेना उतना ही कम है और उतना ही दूसरी जगह एक पोटली फिर मिलेंगी। ठीक है। (27.02.2021)

(23) ये जो महाकाल का रोल है वो कृष्ण के जन्म के बाद शुरू होगा या पहले?

देखो बच्चे साथ साथ महाकाल....हाँ उससे पहले ही शुरू होंगा। ***देखो आत्माओं को सृष्टी पे... उसका(श्री कृष्ण का) शरीर बनना और महाकाल का पार्ट शुरू होना।*** जन्म बाद में है, क्योंकि कहते हैं ना कि जब कोई बड़ा नेता आ रहा होता है ना, तो क्या करते हैं, साफ सफाई करते हैं। अरे इधर खाली करो, खाली करो, भीड़ भाड़ नहीं चाहिए, क्योंकि अपने नेता की गाड़ी आ रही है, यही कहते हैं ना। अगर कोई आने वाला हो, कोई प्रधानमंत्री, कोई मुख्यमंत्री तो सारी रोड को खाली करवा देंगे। भीड़ भाड़ पसंद नहीं है, बिल्कुल रुकना नहीं चाहिए गाड़ी ऐसे करते हैं ना, तो फिर वो तो सारी सृष्टि का नेता आ रहा है। तो क्या करना है, भीड़ भाड़ नहीं चाहिए। हटो हटो भीड़भाड़ नहीं चाहिए। तो क्या करेगा? पहले सफाई!! जल्दी झाडू लगाओ... साफ-सूफ करो, वो तो अपना पूरा संसार का नेता आएंगा। तो अपना बाबा क्या करेंगा? समझ में आ रहा है ना? देखिए आपन अभी नार्मल आप बच्चों के साथ में है। ***उस टाइम अपन को भी नहीं पता पड़ेगा कि अपन क्या बन गए हैं, हो क्या गए हैं, ठीक है उस टाइम की स्मृति जीरो!!*** तो उसका जो कर्तव्य है वो जन्म लेने से पहले शुरू हो जाएंगा क्योंकि कहते हैं ना...अब इस सृष्टि के ही नेता का देख लो कभी मिट्टी में थोड़ी चलेंगा! अच्छा गलीचा होना चाहिए फुल फल होना चाहिए। तो सारी सृष्टि का नेता ऐसे थोड़ी आएंगा, गन्दगी में जहाँ कीड़े मकोड़े हो, जहाँ पाप हो, भ्रष्टाचार हो। कहाँ आएंगा...? अच्छे से फूल फूल पे आएंगा... बगीचे पे आएंगा... खुले खुले में आएंगा... समझ में आया अच्छा और कुछ पूछना है। (27.02.2021)

(24) मुरली में बोला गया हैं कि चित्र में जो शिव का चित्र दिखाया गया हैं वास्तव में शिव तो ऐसा हैं नहीं तो शिव का चित्र कैसा हैं? वैसे तो शिवबाबा तो विचित्र हैं

सबसे पहली बात... ***शिव का चित्र मतलब शिवलिंग के बारे में कहा है। ये शिव..... शिवलिंग के जैसा नहीं है।*** क्योंकि उनका शरीर ही नहीं है क्या है अशरीरी बिंदी है...भई इतना बड़ा बड़ा थोड़ी होंगा। आत्मा तो अति सूक्ष्म है। ***जो इधर चित्र दिखाते हैं शिवलिंग! ऐसा नहीं!! लेकिन ना स्त्री है ना पुरुष है। शिवलिंग के रूप में दिखाते हैं।***अब देखो जब भक्ति मार्ग में उस समय साक्षात्कार हुआ सोमनाथ का मंदिर बना तो शिवलिंग का साक्षात्कार नहीं हुआ था। किसका ***एक हीरे जैसे एक चमकता हुआ हीरे का साक्षात्कार हुआ था। शिवलिंग तो बनाया गया है उसको रखने के लिए। क्योंकि देखो ना स्त्री दिखाई दिया.... ना ही पुरुष दिखाई दिया। तो सोचने लगे अब क्या बनाएं?*** तो बड़ा प्यारा शिवलिंग का स्थापना हुआ और उसके ऊपर रखा गया (कोहिनूर हिरा) सही में हीरा, तो वही हीरा लेकिन हीरा गायब हो गया क्या रह गया? शिवलिंग रह गया!! हीरा गायब क्या बाकी रह गया?? इसलिए उसी के रूप में क्यों? क्योंकि वो हीरा उसके ऊपर रखा था। वास्तव में ऐसा चित्र इधर है नहीं जो बनाये। शिवलिंग का नाम दिया है। ***भक्ति मार्ग में उसको कुछ, और बना दिया है। ये भी क्या कहेंगे? मूढ़मति...!! क्या कहेंगे?? मूढ़मति।*** मूढ़मति मतलब जो मन में आया वो लिख दिया। जो मन में आया बोल दिया। वास्तव में अपना शिवपिता एक चमकता हुआ स्टार है, हीरा है। ऐसा थोड़ी शिवलिंग जैसा भक्तिमार्ग में साक्षात्कार होता है। आत्मा अंगूठे मिसल है। दिया जैसे जलता है, आत्मा ऐसी है। ऐसे दिखाते हैं..... हैना। तो इसका मतलब ये है। इसलिए वास्तव में असली चित्र वो थोड़ी है वो तो विचित्र!! विचित्र..... चित्र से भी परे है। उसका चित्र कोई बना ही नहीं पाएगा!! बना पाएगा क्या बताओ? कोई बना पाएगा चित्र? कोई बना ही नहीं पाएगा। ज्ञान युक्त क्वेश्चन हां पूछे और....(10.04.2020)

(25) बाबा ने कहा था बच्चे आगे चलकर एक्यूरेट त्रिमूर्ति का चित्र बनाएंगे तो वो चित्र कब बनेगा?

आगे चल के एक्यूरेट त्रिमूर्ति का चित्र! बच्चे पहले साक्षात्कार में बच्चियाँ जाती थी, ऐसा दृश्य बताती, बाबा इतना सुंदर, इतना सुंदर चित्र है। लेकिन अब कलयुगी दुनिया में ऐसे चित्र कौन बनावे? किस में ताकत नहीं, जो वो चित्र बनावे। आगे चलके.... ये भी अंतिम का पार्ट है। आगे चलके ऐसे चित्र.....! कारण क्यों? क्योंकि ***एडवांस पार्टी वाली आत्माएं....अपना जन्म लेकरके अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए आ गई है। तो वो सभी आत्माएं एक्यूरेट चित्र भी बनाएंगी ही बनाएंगी।*** आगे चलके.... कब बनेगा? ये डेट कौन पूछ रहा है? डेट नहीं फिक्स है। आज तक अपने बाबा ने नहीं बताया तो हम उसके ड्रामा के अलग से कैसे जा सकता है? पर समय नजदीक है ये कह रहे हैं। एक्यूरेट चित्र बनेंगा। यह डेट वाला तारीख वाला ये कहते हैं कब बनेगा। तिथि तारीख नहीं है। हैना! (10.04.2020)

(26) जैसे त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का बॉडी ऊपर है तो स!कार में भी उनका रोल होता है क्या?

देखो ब्रह्मा सो विष्णु, और विष्णु सो ब्रह्मा वो दोनों एक ही है। ठीक है! लेकिन दीखाने के लिए विष्णु का पार्ट, वो तो होता ही है। ***सतयुग में साकारी दुनिया में तो उनका पार्ट चलता ही है। ब्रह्मा बाप का भी चलता है। पर शंकर का पार्ट ऊपर से ही चलता है। नीचे कैसे आयेंगा?*** भक्ति मार्ग में दिखाते हैं। क्या दिखाते हैं? कभी देखा शंकर के कपड़े! कभी दिखाया? निर्वस्त्र दिखाया है उसका अर्थ किसने समझा। राइट तरीका किस ने समझा? ***उसका अर्थ है, कि शंकर कभी स्थूल कपड़ा नहीं पहनता। वो भी जन्म मरण के चक्कर में नहीं आते। इसलिए शिव और शंकर को एक दिखाया है।*** ब्रह्मा और शिव को एक नहीं दिखाया। विष्णु और शिव को भी एक नहीं दिखाया। पर दिखाया किसको? शिव और शंकर को । कभी ब्रह्मा को और शिव को दिखाया एक? कभी विष्णु और शिव को दिखाएं एक? लेकिन गायन में क्या आता है? शिवशंकर। ब्रह्मा शंकर या ब्रह्मा विष्णु थोड़ी। अगर आता है तीनों का नाम आता है । लेकिन शिव के लिए जोड़के दिखाया है शिव शंकर। जो शंकर है वो शरीर मतलब..... शरीर पर कपड़े क्यों नहीं दिखाए है। क्योंकि वो ***स्थूल कपड़े पहनता नहीं है। स्थूल मतलब क्या? स्थूल शरीर प्रकृति का पांच तत्वों का कपड़ा नहीं पहनता हैं। इसलिए उनको अशरीरी दिखाया है, और उनका पार्ट उपरसे चलता है।*** अब आप कहते हैं बच्चे कि सारी दुनिया विनाश होंगी। पर कोई एक निमित्त नहीं बनेगा। बाप विनाश करेंगा नहीं। क्यों? क्योंकि बाप पे थोड़ी पाप चढ़ेगा। बाप थोड़ी अपने ऊपर पाप चढ़ावेंगा। और किसी एक स्थूल दुनिया का मनुष्य भी विनाश के निमित्त नहीं बन सकता। क्यूंकि अगर हो जावे तो एक पे ही पाप चढ़ जावे। तो अब बचा कौन? शंकर!! तो जब वह दुनिया में जन्म मरण के चक्कर में आएगा ही नहीं, तो पाप कर्म कैसे चढेंगा? कैसे चढ़ेगा? ज्ञान को यथार्थ रीति समझो। सोचो अपना मनमत, बुद्धि मत मिक्स करके अपने भाग्य को लकीर ना लगावे, बच्चों को कहना बाप का यह इशारा है। अच्छे से समझे.... समझने के लिए बाप से सच में प्यार है तो क्या करना है? (जो बाबा बोले) जो बाबा बोले नहीं ज्ञान को यथार्थ रीती समझे। और ज्ञान में चलते चलते, मैं.... मैं... मैं... मैं... होने लगा। मैं...मैं... बकरे जैसे मैं... मैं... मैं... मैं... करते है। यह मैंपना निकाल देवे। ज्ञान को यथार्थ रीती समझ कर, बापकी याद में रहे। ठीक है। और पूछो....। (10.04.2020)

(27) तो यहाँ पर भी धर्म पिताएं ब्राह्मणों की दुनिया में भी धर्म पिताएं होते हैं?

देखो बच्चे ***बाप सिर्फ एक धर्म की स्थापना करता है।*** अगर इधर भी अनेक... भल बाप का कारोबार कहाँ कहाँ कहाँ पूरे सृष्टि में चल रहा है, पर ***अलग अलग धर्म की***

स्थापना बाप नहीं करता।* यह फिर गलत हो जाएंगा। फिर बाप में और धर्मपिताओं में कोई फर्क नहीं रहेगा ।***बाप जब आते हैं एकता के सूत्र में बांधने आते हैं। एकता का पाठ पढ़ाने आते हैं। एक भाषा, एक धर्म, एक ही संस्कारों का स्थापना करने आते हैं।*** तो सतयुग में भी अलग अलग रहेंगे तो क्या होगा ? वर्तमान समय.....देखो आज के समय में भी क्या होता है। अब कोई धर्मपिता आए तो, किसी ने अपने तरीके से कुछ खोला। अपने तरीके से किसी ने कुछ खोला।.....बाप एकता का पाठ पढ़ाने आया है, अनेकता का नहीं। वो सब को एक सूत्र में बांधने आया है पर धीरे-धीरे जब बच्चों को पता चलेंगा बाबा आया है, तो सब के सब एक साथ में ही आ जाएंगे। ठीक हैँ बच्चे !! हाँ सब एक ***एक में बंध जायेंगे एक... एक सूत्र में आएंगे, और वो धीरे... धीरे... धीरे... धीरे... बाप से मिलने जरूर आएंगे।* *पर ये जो कन्या का तन भी लेना बहुत जरूरी है।*** नहीं तो फिर ये होगा ना कि, फिर भी भगवान आया और पुरुष के आगे रखा। इसीलिए कहा कि बराबर का दर्जा देता हैना बाबा...स्त्री-पुरुष को। मुकर्रर रथ रखता है गृहस्ती वाला, पतित वाला। क्यों? क्योंकि अगर कन्या लेवे तो सारी कन्या ही आवे। कोई कहेंगे भई इस कन्या को क्या टेंशन है, इसको थोड़ी बच्चे पालने हैं जो ये ज्ञान देती है बैठके। ऐसे तो कहेंगे ना! अब अपन को तो कोई कह नहीं सकता। कौन क्या कहेगा? और देखो हमेशा देखते हैं बूढ़े में ही आते हैं। कोई जवान का गायन नहीं है। (16.03.2020)

(28) *बाबा प्रत्यक्षता कैसे होगी? साकार में होगी कि सूक्ष्म में होगी?*

बच्चे प्रत्यक्षता साक्षातकार द्वारा होंगा। साक्षात दिखेगा वो जो.... देखो अज्ञानी को दिखेगा उनके भक्ति मार्ग वालों के रूप में। जैसे ब्रह्मा उन्होंने बनाया है, जो वो इमेजिन करते है ब्रह्मा ऐसा है। उनको इस रूप में दिखेगा, और जो ज्ञानी है उनको उस रूप में कौनसा भई पहली वाली शिकिल कहाँ है। पहली वाली शिकिल जो है उनको उस रूप में दिखेगा। अज्ञानी को उस रूप में दिखेगा। ***हर एक देखते ही कहेगा कि यह ब्रह्मा है। यह साक्षात्कार का जो पार्ट अभी चलने वाला है ना, यह प्रत्यक्षता होंगी हर एक आत्मा को साक्षात्कार के द्वारा।*** (16.03.2020)

(29) जैसे बाबा अभी ब्रह्मा बाबा करमातीत कहेंगे कि अभी.....

देखो बच्चे कर्मातीत कि बात कहे... करमातीत जो होता है, कर्म से अतीत। ठीक है! अब कर्म जैसे अपन शरीर में आए हैं, सिर्फ इतना ही। ऐसे तो फिर हम अपने शिवबाबा के के लिए क्या कहेंगे?? वो तो कर्मबंधने से न्यारा है पर जब शरीर में आता है तो सांस भी लेता है। ऑटोमेटिकली सिस्टम चलता है। अब अपना बाबा आता है तो फिर चलता भी है। कब-कब चलता है ना! जब पहले आते थे साकार में तब वो चलता भी था। और कभी कभी बच्चों के साथ वो (कर्म)भी करता था। जब वो शरीर को धारण करते हैं थोड़ा सा कर्म.... बोलते है ना क्यूंकि बच्चों की भक्तिमार्ग में शिकायत रहती है - भगवान आप तो अलग जाके बैठे हो, आपको थोड़ी काम धंदे की टेंशन है!! आपको क्या पता यह

झाड़ कैसे लगेगा? बहुत बच्चे ऐसे हैं। लेकिन जब बाबा तन में आते थे पहले बहुत बच्चों के साथ बहुत खेल-पाल भी होता था। लेकिन आप अगर उस समय बाप को कहें कि बाबा आप संपूर्ण बन गए हो क्या? तो फिर यह तो एक सिस्टम गड़बड़ा जाएगा। क्योंकि बाप तो पतित पावन है मतलब पतित दुनिया में आ करके और पावन बनाना। बोलते हैं ना, भगवान ने विष का प्याला पिया। यही गायन है ना। विष मतलब क्या? बुराइयों का प्याला पी गया । वो पूरा है...। पूरा संपूर्ण है उनको क्या कहेंगे? पूरा सम्पूर्ण कहेंगे सम्पूर्ण, लेकिन कहाँ ना कहाँ उसके लिए भी गायन है, कि एक कोने में वो विष का प्याला चला गया। मतलब उनके लिए भी गायन है कि उसने विष का प्याला पिया। मतलब वो भी नीला थोड़ा (हाँ गले में यहाँ तक अटका रहा नीचे नहीं गया) ये भी भगवान जब आते हैं ये अपना सिस्टम यूज करते हैं। अब जब भगवान के लिए भी कहते हैं, अपना हाथ दो बच्चे... बच्चा अगर इतना पतित है, तो इतना हाथ पकड़के वो निकाल लेता है। मतलब उसका इतना सा थोड़ा सा हाथ खराब हो गया। इसलिए उसको क्या कहते हैं? पतित पावन। इसलिए उसको क्या कहते हैं...पतित पावन!!! कि बच्चे को इतना सा पकड़ कर खींच लेते हैं, और उसको पावन बना देते हैं। लेकिन इतना सा तो खराब हो ही गया ना। उसके लिए भी गायन है.... भक्ति मार्ग में भी गायन है। और वह आता ही पतित दुनिया में पतित शरीर में है। तो अपन के लिए अब क्या कहेंगे? आप बतावे। हाँ यह है कि संपूर्ण तरीके से आत्मा पावन कब बनती है?? ***जब वो परमधाम में बाप के सम्मुख बैठी होती है। उस समय उसकी हाईएस्ट अवस्था होती है। "हाईएस्ट प्यूरिटी" क्योंकि बच्चे सूक्ष्म वतन में बैठके भी कर्म मतलब.... इस सृष्टि में कर्म करना है।*** और कर्म सिर्फ जो भी आने का है, जो बाबा ने साकाश देने का कर्तव्य दिया है। जो नई दुनिया लाने का कर्तव्य दिया है और लाइट के शरीर से... रफ्तार से तेजी से.....सेवा होता है। पर ये शरीर ये शरीर बंधन आ जाता है। तो कर्मातीत मतलब जो इस शरीर से कर्म कर रहे थे उससे अतीत, उससे न्यारे। दुनिया के भाषा में कर्मातीत । पर ऊपर वतन में गए तो फिर भी वो कर्म अलग हो गया। वो एक इशारे का हो गया। इशारे का देखना, इशारे से सब कुछ करना वो फिर वो एक अलग....। दुनिया की भाषा में इस विश्व की भाषा में कर्मातीत मतलब ये जो शरीर धारण किया, इससे कर्म जो किया जैसे नहाना, धुलाना शरीर को, सजाना, संवारना, इस से कोई मतलब नहीं। इन सब कर्मों से भी ऊपर उठ गए। समझ गए? पक्का समझ गए हाँ... और पक्का समझो।***इस संसार के हिसाब से कर्मातीत।*** अब एक बात बतावे यह भी बाबा सिद्ध करता है, कि बच्चे शरीर हो या ना हो, पर मेरा कार्य नहीं रुकेगा। ये बाबा का सिद्धांत है क्योंकि वो क्या है? वो एक परम शक्ति है। परमशक्ति! परम मतलब उसके पास में कोई हो नहीं... फर्क नहीं पड़ेगा पर वो अपना कार्य जरूर करेंगा। ठीक है। अच्छा बच्चों और पूछो। (16.03.2020)

(30) बाबा ने साकार वाणी में बोला था, कि मुझे ब्रह्मा चाहिए, तो प्रजापिता ब्रह्मा भी जरूर चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा में मैं नहीं आ सकता।

देखो बच्चे बिल्कुल एक्यूरेट पॉइंट पूछा। देखो बच्चे जब अपना प्यारा बाबा आता है तो सबसे पहले सूक्ष्म वतन की स्थापना करता है। और उसमें एक ब्रह्मा बनाता है। वो ब्रह्मा ऐसा होता है एकदम संपूर्ण ब्रह्मा लेकिन बनानी तो सृष्टि है! तो इस सृष्टि में ब्रह्मा चाहिए। उस ब्रह्मा से वो इस सृष्टि को नहीं रच सकता। यहाँ पर एक प्रजापिता मतलब मिट्टी का बना हुआ पुतला चाहिए। समझ रहे हो ना। बना हुआ प्रजापिता वो ब्रह्मा मतलब सम्पूर्ण। ***पहले सुनो ब्रह्मा दो हैं। अब पहले बता रहें हैं - सूक्ष्म वतनवासि और जब बाबा ने अपन को भेजा शरीर में... और जब धारण किया तब ब्रह्मा। उससे पहले कोई ब्रह्मा नहीं। देखो कहते हैं ना धर्मराज का पार्ट कैसे चलेगा!!*** भई अपन को इस सृष्टि में बनाया लेकिन जब लाइट के शरीर की आत्माएं वहाँ जाएंगी तो धर्मराज भी तो चाहिए ना!! अब अपन इधर आए हैं। देखो शुरु शुरु में बच्चियाँ जब वतन में जाती थी तो कहती थी... बाबा आपके जैसी शिकिल वाला एक और बैठा है। हैना!! तो... हाँ भाई जरूर है, बैठा है। पर बाबा उसमें बड़ी चमक है... आपमें अभी चमक नहीं आई है। एसे... हाँ बच्ची सही बोल रही है। अभी चमक नहीं आई है पर बड़ा पुरुषार्थ....। और बाबा और चमक लेके आओ ना **। *शरीर छोड़ने से कुछ एक दो रोज पहले बाबा अब आप चमक गए हो। अब आप उनके जैसे दिखने लगे हो। अच्छा- बढ़िया!! बच्ची बड़ी होशियार थी।*** मतलब उनको पता था कि अब ये शरीर छोड़ने वाला है। बच्चियाँ बड़ी होशियार थी। एक दो संदेसी नहीं थी पहले दो चार संदेसियाँ बच्ची थी.... अच्छी-अच्छी संदेशियाँ जो एक्यूरेट संदेश लेकर आती थी। फिर जैसे शरीर छूटा, तो छोड़ने से पहले लगा, बाबा आपने तो कहा है कि, संगमयुग 100 साल का है.... पर कारोबार कैसे चलेगा? छोड़ा.... बेफिक्र हो गए पुरे...। जैसे वतन में देखा अपनी शक्ल जैसा एक बैठा है । ***जैसेउस शरीर में अपन का लाइट का शरीर जैसे ही हुआ तब बना संपूर्ण। वो संपूर्ण अवस्था दोनों एक में जुड़ गये, चिपक गए, दोनों, तब संपूर्ण।*** दोनों..... नीचे का और ऊपर के। चिपकने का मतलब ऐसा नहीं कि वह उससे उतर नहीं सकते। उतर सकते हैं। जब उसमें समाता है तब ही धर्मराज का रोल शुरू होता है। (पूरा रीती जब समाते हैं)पूरा रीती जब... लेकिन जब तक चल रहा है ना 100 साल का कारोबार तब तक क्या होंगा? अपन का आना जाना रहेगा उनमें बैठना। वो कहते है बच्चे एक सकेंड में धर्मराज बनो.....तो एक सेकंड में घुसना पड़ता है, जाना पड़ता है। वो ब्रह्मा बड़ा ऐसा है बड़ा तेजवाला। उनका संस्कार अपन इस सृष्टि पे लेकर नहीं आ सकते। अपन का जो संस्कार है वो पहले वाला ही रहेंगा...थोड़ा लेकिन जब उस में आते हैं तो.....नहीं दिखता है। मतलब जब इधर आतें हैं तो वहाँ का नहीं आता है। लेकिन जब वहाँ जाते हैं, तो इधर का कुछ नहीं होता है। लेकिन जब बच्चियाँ भोग लेकर आती है, तो इधर का ही इमर्ज हो जाता है। बड़ा एक सेकंड का काम है। बडे गहरे रहस्य है, बड़े गुह्य रहस्य है सुनते रहो... बड़ा मजा आएगा। मजा आ रहा है... हां बच्चे।(16.03.2020)

(31) बोला था कि छोटी ऐसी ऐसी बच्चियाँ थी जो मात पिता को भी दृष्टि देती थी, ज्ञान सुनाती थी वह आज यज्ञ में है नहीं..

देखो यज्ञ में है नहीं, पर वो आ रही है। (पुनर्जन्म लेके) आ रही है, सभी बच्चियाँ आ रही है धीरे धीरे धीरे पर अपना एक ये है कि अपन किसका नाम लेकर के नहीं कहेंगे। क्यूंकि ऐसे फिर बहुत बच्चे आएंगे कहेंगे कि बताओ हमें भी की आप साकार में.....। झूठ थोड़ी बोलेंगे ना भाई। झूठ तो नहीं बोल सकते ना। बाबा बताओ ना के हम थे या नहीं थे। प्यार तो सब का रहेगा। अगर सब साकार के बने तो लास्ट सो फास्ट कौन बने? ***लास्ट सो फास्ट भी तो चाहिए ना। तो यह बच्चे भी बच्चियाँ भी ऐसी हैं जो लास्ट सो फास्ट जाने वाली भी है।*** ठीक है। वो बच्चियाँ धीरे-धीरे करके कहाँ कहाँ.....जैसे सब बच्चे....समझो यह बाबा का हाथ है और इसमें हीरें है और ऊपर से ऐसे छोड़ दिए। कोई हीरा किधर पड़ गए जाके.... कोई दिल्ली, कोई बॉम्बे, कोई कलकत्ता, कोई कहाँ, कोई कहाँ, सब हीरे इधर-उधर, इधर-उधर गिर गए, और फिर धीरे... अब क्या हो रहा है। सुन सुनके सीधे सीधे बच्चे आएंगे और उनको अपने आपके बारे में पता पड़ेगा। बाबा मैं भी उसमें से एक हीरा हूँ। मैं भी आ रहा हूँ। हुआ ना बुद्धि में टच। हाँ ऐसे बहुत बच्चे हैं जो पूछ पूछ के पूछ पूछ के आते रहेंगे। और पूछो बच्चे।(16.03.2020)

(*32) वो जो माँ बाप को भी दृष्टि देते थे तो क्या बाबा उनमे प्रवेश करते थे?*

देखो बच्चे बाबा ने कितनी बारी कहा है कि बच्चे मान लीजिए कोई बच्चे में ज्ञान नहीं है, हैं ना, फिर बाबा क्या करते है एक सेकंड में प्रवेश करके उसके मुखसे बोल के निकल जाता हूँ। परमानेंट का सिस्टिम बाबा का नहीं है बच्चों। वो बाबा है। ***वह एक सेकंड इनसे बुलवाएगा तो दूसरे सेकंड आपसे बुलवाना शुरू कर देना। फिर आप से पूरा हो गया तो फिर विदेश में जाकर किसी से बुलवाकर आ जायेगा।*** (बाबा प्रवेश नहीं करेगा खाली बुलवाएगा) क्योंकि मानो एक छोटीसी बात बताते हैं। मानो सूर्य है..... सूर्य की किरणें कितनी सारी है। एक किरण आप पे पड़ी है दूसरी इसपे पड़ी है और गर्मी दोनों को लग रही है। आप कहेंगे की आपमें सूर्य घुस गया है, तो ऐसा तो नहीं कहेंगे ना। ***वह पावर उधर बैठा है पर वह एक यहाँ पर ऐसे पवार भेज रहा है ऐसा जैसे..... अब पावर हाउस है।*** पावर हाउस। कहेंगे मेरे घर में पावर हाउस लगा है तो यह गलत होगा। पावर हाउस तो एक तो कहाँ लगा है किसको पता है? पर उसकी जो करंट है वह आपके घर में भी आ रही है पड़ोस में भी आ रही है सामने भी रही है। यह होता है। है ना!! लेकिन कभी-कभी लाइट भी चली जाती है। लेकिन पावर हाउस की लाइट बहुत कभी जाती नहीं। है ना! और इस दुनिया की चली जाती है लेकिन वह पावर हाउस है ना!! उसकी लाइट कभी जाएगी नहीं। ये जो सूर्य है ना, एक किरण इसपे पड़ रही है तो दूसरे सेकंड वो आपसे बुलवा रहा है, इन से बुलवा रहा है, इनसे भी करवा रहा है। क्योंकि जो बड़े प्यार से याद करता है वह ऐसा पूरा पावर छोड़ता है**, *आपको भी पता नहीं पड़ेगा आपने क्या किस मिनट में क्या बोला। पर ये कहेंगे कि सूर्य इसके अंदर घुस गया है.. यह गलत हो जाएंगे।*** क्योंकि देखो बच्चे... अपन को भी उस समय बाबा आता था जितना उतना ही ज्ञान था। पर अब अपनका शरीर छूटने के बाद

ऐसा ऐसा राज खुला..... बड़ा वंडरफुल!! अपन तो वो हो गये... बाबा ऐसा भी होगा....!!!! ऐसा भी होगा....!!!!यह भी होगा....!!!! पहले थोड़ा पता था..... अब पूरा पता है। पर बाबा कहेंगे - नहीं बच्चे जितना जरूरत है उतना बताना ज्यादा नहीं बताना। *__जितना जरूरत है बच्चे, जितना बच्चों की बुद्धि का ताला खुलेंगा उतना ही बताएंगे। है ना? अब पहले छोटा पेट था अब बड़ा पेट लग गया। बड़ा पेट मतलब राज समानेवाला।__* ठीक है बच्चे। हाँ इसकेलिये क्या कहते हैं बड़ा पेट लेकर घूमता है। बड़ा पेट का गायन क्यों है क्योंकि उसमें सबकुछ समाया हुआ था। और पूछो बच्चे।(16.03.2020)

(33) बाबा आपका शरीर जो छूटा था तो अपने मन से छूटा था...या कैसे छूटा था?

अच्छा उस समय अपन को पता पड़ गया था कि, अब जाने वाले हैं और बहुत शरीर छूटने से पहले बड़ा खाँसी होता था, बड़ा दिक्कत होता था। बाजा खराब हो गया। लेकिन जब शरीर छूटा तो पता पड़ा भई अब कारोबार किसको हवाले करना है। यह अवस्था तब वहाँ थी। तभी तो फिर सतयुग में होंगी ना। सतयुग मैं भी संस्कार लेकर जाएंगे ना के,***सात दिन पहले सात रोज पहले पता पड़ जाएगा अब जाना है। चलो भई आओ सबको अपना-अपना दे देते हैं। चलो संभालो अपना कारोबार । ऐसे पहले पता पड़ जाता है।****(16.03.2020)

***(34) और जो कहते हैं कि बाबा को हार्ट अटैक आया था वह तो गलत है ना बाबा...*यह किसने कहा?**

ये हार्ट अटैक!!! (यहाँ से किसी ने नहीं कहा बाबा। बहार की बात कर रहे हैं) कुछ भी बच्चे बोलत हैं हार्ट अटैक क्यों आएगा हार्ट अटैक। बताओ वंडरफुल बात है!! (बाबा हमने तो पहली बार सुना) अपन ने भी पहली बार सुना है हार्ट अटैक आया...!!!! (आपको अटैक आया और आप ही को पता नहीं) अरे देखो अपन को ही पता नहीं। वाह! बड़े बच्चे वंडरफुल है। आप तो कुछ और भी कहेंगे अब पहले अभी..... बाबा ने कहा पुरानी चीजों से मोह हटाना है। अब मधुबन में देखें पुराना कुर्ता रखा है....!!! वो कुछ कुछ रखा है... इतना सा वो गीता भी रखा है। सबको संभाल कर रखा है, अब क्या करेंगे? उस का टुकड़ा बेचेंगे? क्या करेंगे? यह देखो देखने का यह देखो किसका है ये... ... यह ब्रह्मा बाबा का! यह पता है किसका कुर्ता है..... ब्रह्मा बाबा का! और ये बताओ यह किसका.....बाबा कहते हैं कि पुरानी दुनिया को छोड़ो, और सब पुरानी चीजें लेके बैठे हैं। यह क्या है ये अटकना है। आप अभी इसमें अटक जाओ। यह क्या है फिर नई दुनिया कैसे आएंगे? तो आप तो एक कुर्ते में अटक गए। आप एक छोटा सा लाठी में अटक गए। जब अपन ने सब छोड़ा बताओ यह वंडरफुल बात है ना? सब चीजों को साथ में संस्कार करना चाहिए पर बचा बचा के रख लिया। फिर इसको क्या कहेंगे? भई भासना है भासना तो उस पत्थरों से आती है जिनको तोड़ा है और जिनमें ऐसे पसीना बहा है। उससे आती है। और किस से कैसे आएंगे बताओ? अब चलो बच्चे की बुद्धि है। अब उनको पुरानी दुनिया अच्छी लग

रही है पुरानी चीजें पसंद आ रही है तो फिर ठीक है लेवे पुरानी चीजे । और जिनको पुरानी चीजें पसंद नहीं है तो उनको सतयुग देंगे। आपको पुरानी चीजें पसंद है तो आप चीज रखो। और जिसको नई दुनिया पसंद है तो उनको क्या देंगे? नई दुनिया देंगे। हा बच्चे और पूछो.... (16.03.2020)

(35) बाबा ने साकार वाणी में बोला था कि मैं बंदरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। मैं जहाँ 32 प्रकार के भोजन मिलते हैं, वहाँ कब आता ही नहीं हूँ, जहाँ रोटी भी नहीं मिलती वहाँ बच्चों को गोद में उठाये अपना बच्चा बनाता हूँ...

देखो बच्चे सबसे पहले जब आए तो बंदरों की ही महफिल थी। बंदर माना क्या? ***पहले बंदर माना बन्दर मना जिसमें पूरे विकार कूट-कूट कर भरे हुए है, वो बंदर है। बंदरों की महफिल में आता हूँ बाबा ने बिल्कुल बरोबर कहा है। देवताओं की महफिल में क्यों आएगा उनको जरूरत ही नहीं है !!*** बंदरों को जरूरत है तो उनकी महफिल में आएगा। बंदर मतलब पतित। बंदर मतलब क्या? पतित बुद्धि वाले। वो पुकार रहे हैं.... हे भगवान आओ। है ना.... यह जो है ना बंदरों की महफिल में..... ***इसीलिए ही भक्ति मार्ग में क्या गायन हो गया, कि राम वानर सेना में आए जंगलों में...*** । ये बच्चे जब बाबा आए, उस समय बाबा का जो रोल चला, खाने को रोटी... जब बेगरी पार्ट चला, उस समय क्या हुआ? बेगरी पार्ट.... उस समय खाने के लिए भी क्या नहीं था? रोटी नहीं था। तुरंत थोड़ी खाने के.....।जो पॉइंट बाबा बोलता है ना बाबा वो ***एक पॉइंट बोलता है फर्स्ट की.... दूसरी बोलता है बीच की... तीसरी बोल देता है फिर (अंत की) हाँ और बच्चा उसमें घूम जाते है..... ये भी बोल दिया... फिर यह भी बोल दिया.... फिर यह भी बोल दिया..... और बाबा है....*** .कि जैसे मानो यह पूरा बडा इतना बड़ा चिट्ठी है और उस चिट्ठी का एक ही पॉइंट बोलेंगा, अब पूरी चिट्ठी को आपको समझना है। ये बाबा का है... राज़ और यह सिस्टम है। वो विस्तार में कब नहीं जाता है। आपने कब बच्चों देखा विस्तार में..... एक शोभा बच्ची (गुलज़ार दादी) में आया बच्चों को करना था विस्तार करना था। तो बाबा बच्चों के साथ खेल पाल भी करता था। आता था। अपन भी आते थे। ज्ञान के राज भी खुलते थे। लेकिन वर्तमान समय देखना बाबा, पूरा पेज का एक ही वाणी बोलेंगा और यह जो एक-एक लाइन है ना, और उस समय बाबा ने एक एक रहस्य को..... एक एक अक्षर में पूरा रहस्य छुपा है। बाबा ने बोला मैं बंदरों की महफिल में आता हूँ। अब बन्दर भूखे थोड़ी थे खा रहे थे, तभी तो थे ना !! जी रहे थे। अब रोटी भी नहीं होती तो क्या करते? ***लेकिन जब बेगरी पार्ट चला.....उसके लिए बाबा ने ये शब्द बोला लेकिन उसके पीछे कुछ और भी रहस्य है तो फिर आगे चलके जरूर बताएंगे। ठीक है !***एक नहीं है बाबा के एक एक.... जैसे आज की दुनिया में एक शब्द होता है उसके कई अर्थ निकलते हैं। है ना बच्चे। और बच्चे अगर ऐसे लाइन पे लेकर चलेंगे, ये बोला था, या यही होना चाहिए ये थोड़ा रॉन्ग हो जाता है। क्योंकि बाबा का एक-एक शब्द और उसके कई अर्थ होते हैं। समझ गए ना बच्चे।***अब ये कहते हैं बाबा**

मधुबन में ही आएगा। ये तो मूर्खता वाली बात है। जब बाबा परमधाम को छोड़ सकता है बच्चों के लिए तो मधुबन क्या बड़ी चीज है?? उसको सोने के महल बना करके कहते हैं आपको क्या जरुरत थी छोड़ने की??* यह तो सोने का था!! भई आप भी छोड़ो। मैंने छोड़ा आप भी छोड़ो। छोड़ा ना...। अपन के बाबा ने छोड़ दिया आप भी छोड़ के देखो । लेकिन पुरानी चीज में अटकना बड़ा पसंद है। छोड़ना मतलब क्या?? बुद्धि से छोड़ना फंसे पड़े है, उस में फँसे पड़े है। अब कहे अपना बाबा तो कराची में ही आया था। मधुबन बाबा ने बनाया या मधुबन ने बाप को। किसने बनाया?? बाबा ने मधुबन को बनाया। मधुबन ने बाप को नहीं बनाया। बाबा कितनी जगह आए इतना लंबा पार्ट चला देखो..... कराची में, उसके बाद बॉम्बे में भी देखो कितना पार्टी चला, उसके बाद बाबा दिल्ली में भी आये (16.03.2020)

(36) बाबा ये पूछना था के पहले जब दादी के तन में बाबा अव्यक्त मुरली चलाते तो एक्सप्रेशन ऐसे ही था सिंपल.... फिर धीरे धीरे बाबा स्माइल के साथ बोलने लगे तो अभ्यास...कहते है..?

इसको अभयास कहेंगे क्योंकि बच्चे बाबा एकदम शून्य है। जिनको..... देखो बनाया उन्होंने ही (शिवबाबा ने) शरीर को तैयार उन्होंने ही किया लेकिन उन्हीं को ही कई बार बजाने में थोड़ा सा..... क्योंकि अगर बाप भी शरीर धारण करें तो भगवान कौन होवे? वह तो न्यारा और प्यारा है ना। तो जब वो आता है तो वो भी थोड़ा .....। ***बस इतना है कि उनका अपने में ट्रांसफर करता है और अपना उन में ट्रांसफर करता है। अदला-बदली करता है, तो थोड़ा तो अभ्यास हो जाता है।*** शुरु शुरु में तो जब आए ना अपन को भी पता नहीं पड़ा यह कौन घुस गया? कौन आया है? ऐसी शक्ति कहाँ से आ रही है? कौन है ये जो आया है? और जो आ करके चला भी जाता है। ***एक-एक मिनट में आता है एक-एक मिनट में चला जाता है। क्योंकि उस समय में बाबा की शक्तियों को कोई परमानेंट अपने अंदर नहीं समा पाएंगा। बाबा आता फिर निकल जाता। आता फिर चला जाता। दो साल तक फिर बाबा का ऐसे चला।* फिर बोलता अकेले में... बोलता था.....लखी आप कौन हो?आप आत्मा हो। *लिखो "मैं आत्मा हूँ "। लिखवाता था, यह कौन है?*** ये लखी, जिसको जसोदा सोचता है ना यह कौन है? ये भी आत्मा है। यह किसके बच्चे हैं? ***आप शरीर के पिता हो लखी..... आप आत्मा के पिता नहीं हो। बाबा ऐसे बोलता था पहले अकेले में। बच्चियाँ कभी कभी सुनकरके कहती थी क्या बड़बड़ाते हो आप अकेले में?*** कुछ नहीं वो कुछ बोलते हैं अपन लिखते हैं। क्या लिखते हैं? "मैं आत्मा हूँ" अरे भई ये आत्मा क्या है? हाँ मैं आत्मा हूँ.....। (16.03.2020)

(37) दोनों एक ही मुख से बोलते थे?

एक ही मुख से..... ऐसे.....उस समय पता पड़ता था ना फिर लिखते थे। बड़ा पहले..... पहले अब *__आप "लखी" नहीं रहे हो "लखी" नहीं रहे हो "लखी दादा" नहीं हो आप। अब आप कौन बन गए? (किसी बच्चे ने कहा - प्रजापिता ब्रह्मा) नहीं वो बाबा ने बाद में नाम दिया ।*__ वो जो दिया हैं ना फिर बादमें दिया। पहले बाबा अच्छे से शरीर को ठोकता है, ये काम करने लायक है? अच्छे से। नहीं करने लायक है तो उसको बनाएगा ऐसे । बना करके फिर तैयार करके फिर आएंगा अपने आप प्रत्यक्ष हो जाएगा। (16.03.2020)

(38) *तो बोलते थे लखी नहीं हो, कौन हो.... तो क्या बोलते थे बाबा?*

"आत्मा".....!!!! ***लखी नहीं रहे आप। शरीर का नाम लखी है। कौन हो? आत्मा हो....!!!!*** और फिर जब बाबा जाते थे अपन भी बड़ा ध्यान में बड़ा मजा आता था। देखते थे अपन ही क्या बनेगा छोटासा बनेंगा.... श्री कृष्ण बनेंगा। वो ऐसा नशा चढ़ाया भई बाबा ने.... बोलते अपने हीरे सब.... उठाओ और लगाओ सब कुछ। (16.03.2020)

(39) और आवाज कैसी होती थी बाबा?

उस समय? तभी आवाज सेम थी क्योंकि अपना बाबा को कहते है, बाबा भी कौन है परमपिता परमात्मा। तो ऐसे ज्यादा नहीं कहते... लेकिन क्या कहते है? (परमपुरुष भी कहते हैं बाबा को) परमपुरुष मतलब वो कौन हैं? वो क्या है? वो मेल है। तो देखो शरीर मेल फीमेल का होता है, पर परमपिता तो मेल ही है। बाबा क्या कहते हैं? आत्मा रूप में भाई-भाई कहते हैं। है ना!!आत्मा के रूप में भाई बहन कभी नहीं कहा बाबा ने शरीर के रूप में कहा भाई बहन लेकिन आत्मा के रूप में क्या कहा? बहन बहन तो नहीं कहा! भाई भाई मतलब सब आत्माएं क्या है? मेल है। ***शरीर बनता है मेल फीमेल उसके अनुसार फिर संस्कार बनते हैं। शरीर में आए मेल में तो ऐसे संस्कार..... फीमेल में आए तो फिर ऐसे संस्कार... ऑटोमेटिक सिस्टिम बनता है।*** हाँ पूछो.... ये बड़ा अच्छा है देखो ऐसे ऐसे पूछना चाहिए। हैना बुद्धि चलनी चाहिए। इससे क्या होता है?(16.03.2020)

(40) हाँ बाबा वो जो आपके पार्टनर थे ना भागीदार उनका क्या रोल था उस टाइम?

बच्चे उस समय तो देखो अपन ने बड़ा सुनाया भी बच्चों समेटलो अभी, अभी घर चलना है, पर बच्चे को समझ में नहीं आया। अब ऐसे तो भई अपना भी लौकिक परिवार था। जो भी उन्होंने जो लिया जितना हिस्सा लिया। लेकिन लेने से पहले अपन ने बड़ा सुनाया... भगवान आ गया है अब बड़ा शक्तियाँ मिल रही है। पावर मिल रही है वो मिल गया है। आप भी चलो। नहीं नहीं अपनको बीवी बच्चे पालने हैं, उनका जवाब ऐसा था। ठीक है

भाई आप बीवी बच्चे पालो, बई अपनका समेटदो फिर अब अपनको निकलना है।***उसके बाद आये नहीं वो?***नहीं बच्चे उसके बाद वह बच्चा नहीं आया। (16.03.2020)

(41) तो 50-50 दिया था उन्होंने?

50-50.....!!!! देखो बच्चे उनको हीरे की ज्यादा पेहचान नहीं थी तो उनको लगता था, जो धन रखा था जो पैसे रखे थे उसने लिए ....। सामान लिया...। बई उसको लगता था कि ये ठीक है। ***देखो बाबा भी कितना चतुर सुजान है। उसको हीरे का समझ ज्यादा नहीं था..... तो सारे हीरे इधर खिसक गए, बई यह सारे पैसे आप रखो भई ठीक है आप रखो। (महेंगे हीरे इधर आ गए) आ गए । उसकी कीमत थी... नहीं पता था बच्चे को.... भल भागिदार था लेकिन ज्यादा... , आपको जितना लेना है भई आप लो। ऐसे कागज के नोट लिए उसको लगा बहुत सारे है अपना काम चलेंगा।*** ऐसा....बच्चे बड़ा वंडरफुल पार्ट है, था भी....।कई बच्चे नाम में उलझ जाते हैं, क्योंकि बच्चे देखो वर्तमान उस समय बहुत बच्चों के नाम थे अब किस-किस के शरीर के नाम याद रखते बैठेंगे !! (16.03.2020)

(42) तो वो भी आएंगे ना वापस ज्ञान में बाबा?

हाँ बच्चे पार्ट है आत्मा का। संग रहें हैं तो जरूर आएंगे। चांस तो मिलेगा ना! जब हर एक आत्मा को डबल चांस मिलता है तो उसको भी चांस मिलेगा। पर वो बच्चे आएंगे। (16.03.2020)

(43) बाबा ने कहा ना भारत माता शिवशक्ति अवतार अंत का यही नारा है तो भारत माता अंत में प्रत्यक्ष होंगी?

"भारत माता शिवशक्ति अवतार" अंत का यही नारा है। ये अंत का नारा... पर वो बाप के साथ गायन होगा। ***शिवशक्ति का अवतार हो चुका है।*** वो तो देखो बाबा ने शुरू में ही शिवशक्तियों को आगे रखा और अंतिम में ही प्रत्यक्षता भी किससे होंगी? ***शिवशक्तियों से होंगी।*** (16.03.2020)

(44) *वो पुरुष चोले में भी हो सकती है फीमेल चोले में भी हो सकती है...?

देखो शिवशक्तियों का अर्थ क्या है? ***शिव की शक्ति!! इसका मतलब ये नहीं कि भई शिव कि शक्ति तो मेल में भी है.... फीमेल में भी आएंगे..., तो उसमें समझना है। ऐसे कोई सोचते हैं कि शिव शक्ति मतलब स्त्री ही होंगी! ये नहीं...। ये नहीं है। शिवशक्ति मतलब शिव की शक्ति। जब हर एक के अंदर शिव की शक्ति***

आएंगी तो क्या बोलेंगे। उसमें फिर मेल फीमेल सब आ जाता है शरीर से होता है ना बच्चे। शरीर से स्त्री-पुरुष होता है। लेकिन शिव की शक्ति ना तो आने में पुरुष को देखती है ना स्त्री को देखती है। शिव की शक्ति किसको देखती है क्या?* ना वो स्त्री को देखती है.....अब जैसे मानो सूरज है वो जब पड़ता है.... आप भी खड़े हो जाओ वो भी खड़े हो जाएंगे, तो वो तो आपको भी इतनी ही गर्मी देंगा, उसको भी इतनी ही देंगा यही है ना।अब ऐसा तो नहीं होंगा ना कि भई वो फीमेल है, आप मेल हो तो आपको बँटवारे से मिलेंगा। ऐसे ही बाबा बराबर मात्रा में लेकिन उसमें आपकी शक्ति कितनी हैं? आपको सहन करने की शक्ति कितनी है? वो आपको लेने की पावर कितनी है, वो फिर आपके ऊपर देखते हैं। बई आपकी पावर ज्यादा भर गई तो आप थोड़ा धूपसे किनारा हो जाएंगे, या फिर अपने पावर को अच्छे से यूज करेंगे निकालेंगे। फिर शिव से शक्ति लेंगे। शिव की शक्ति... हर एक.. ना स्त्री देखता है ना पुरुष देखता है। वह शिव शक्ति है तो सबके अंदर है। ठीक है बच्चे। (16.03.2020)

(45) बाबा पीहू की वाणी जो चली थी तो वो बोलते थे कि वहाँ पर पाकिस्तान में ही दबा दी गयी थी ऐसा कुछ है क्या?

अच्छा समझ गए... समझ गया..... हाँ बच्चे वो बहुत सारे रहस्य है जो वहाँ पे दब चुके हैं। क्योंकि बहुत बच्चों ने जो आप केह रहे हो, पूरा लिखकर के बड़ी बड़ी डायरियाँ बना करके ऐसे ऐसे रहस्य थे कि कोई बच्चा अपने आप से दूर नहीं कर पाता था। उसको लगता था की हम जब किस को सुनाएंगे तो ये रहस्य भी सुनाएंगे लेकिन उनको वहाँपे ही दबाया, क्योंकि उसमें भी कल्याण था। उसमें भी भक्ति मार्ग में क्या होंगा? क्या होगा? शास्त्र बनेंगे। तो ये बहुत सारे ऐसा था कुछ उधर जो दबाना पड़ा। (16.03.2020)

(46) बाबा ये खराब नहीं होंगे?

देखो बच्चे ऊपर का पन्ना खराब होंगा, नीचेंका हो जाएंगे लेकिन बीचका रहेगा ना। वो तो आप पानी में भी डाल देंगे ना आग में भी जला देंगे ना तो भी उसका दो चार लाइनें रह ही जाता है। पूरा इतना संभाल संभाल के उनको अच्छे से कि बाबा ये खराब नहीं हो। बच्चियाँ सोचती थी कि कभी आना होंगा ना तो निकालके ले जाएंगे। पर मौका ही नहीं मिला। (16.03.2020)

(47) *तो बाबा वो पीयू की वाणी आपके (ब्रह्मा बाबा) के मुख्य से ही चलती थी ना?

बच्चे बिल्कुल चलती थी.... लेकिन बच्चियों के मुखसे ज्यादा चलती थी उस समय। बिल्कुल...!!ये पीयू की..... बाबा के जो...अब देखो बच्चे, बाबा का जो हैं ना, आप जो उस जिसमें देख रहे हो बाबा उस रूप में दिखाई देंगा। ***लेकिन जो बाबा का उस**

समय का जो पार्ट चला बड़ा वंडरफुल था।* उस समय अब जो बाबा का पार्ट चला। मानो अभी अपन ऐसे बोल रहे हैं अगर इन्हीं की आवाज में बाबा बोलेंगा, तो किसको विश्वास होंगा (नहीं किसी को नहीं होगा...) समझ गये...। किसी को विश्वास नहीं होगा। इसीलिए बाबा कैसे बोलते हैं। (उसी स्टाइल में) बई आपको ऐसे देखना हैं ना, कि ऐसे ही बोलता था, तो आप ऐसे ही देखो। लेकिन कहीं-कहीं बाबा ऐसे बोलते हैं कि बच्चे जो वाणी उस समय चलती थी और जिसको समझ में आता था उसी को ही समझ में आता था। और भी बहुत सारे रहस्य है और इस रहस्य को और अच्छे से क्लियर करेंगे आने वाले समय में। पूरा अच्छे से साफ करेंगे।(16.03.2020)

(48) बाबा ने कहा है कि तुम बच्चे अंत में परमधाम को और सूक्ष्मवतन को नीचे उतार लेते हो यह कैसे होगा?

हाँ देखो बड़ी अच्छी बात है। अंत समय में तुम बच्चे परमधाम को, नीचे उतार देते हो। सबसे पहली बात अंत में कहा ना!! बीच में थोड़ी कहा! कब कहा? अंत में। अंत में तो वैसे ही सुख शांति होगी। सब पाप खत्म !! ***अंत में परमधाम मतलब जब सभी आत्माएं नब्बे प्रतिशत (90%) आत्माएं परमधाम चली जाएंगी तो परमधाम भर जाएगा और यहाँ खाली!! तो क्या बन गया इधर शांति धाम।*** मतलब अब शांति धाम कहाँ है? ऊपर है। क्यों? क्योंकि अब सभी आत्माएं कहाँ है? नीचे है। लेकिन जब सभी आत्माएं ऊपर चली जाएंगी तो परमधाम कहाँ आ जाएगा? नीचे हो जाएगा। शांति हो जाएगी..... शांतिधाम मतलब ऐसा नहीं है के ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर हो जाएगा। ऐसा नहीं है। ***ऐसा है कि पूरे विश्व में शांति हो जाएंगी।* और सूक्ष्मवतन भी नीचे अब कैसे होंगा**? कि **सभी बच्चे की योग तपस्या अब इतनी अच्छी होंगी.... अंतिम समय में ऐसी स्टेज आ जाएंगे.... चलते फिरते फरिश्ते नजर आएंगे और क्या होंगा?* **हाँ सिर्फ दृष्टि से ही समझ जाएंगे। क्या समझ जाएंगे? इशारे से दृष्टि से समझ जाएंगे। ऐसे ही अंतिम समय का पार्ट क्या होंगा? हर एक आत्मा.... वो कहते हैं ना इशारे से समझे वो देवता! हैना.*...!** देवता बन जाएंगे! संपूर्ण बन जाएंगे! तो इशारे की भाषा समझ में आ जाएंगी। और फरिश्ते चलते-फिरते... फरिश्ते हल्के....।***जब कोई रहेगा ही नहीं तो चलते फिरते सुक्ष्म वतनवासी फरिशते ही रहेंगे ना। तो सूक्ष्म वतन और परमधाम नीचे आ जाएंगा।*** हाँ लेकिन इसमें विशेष अंडरलाइनर रखें के "अंत में" क्या कहा? "अंत में" और "अंत आ गया है"। ये दिख रहा है ना इतना बड़ा चकाचौंध यह ज्यादा समय का नहीं है। (10.04.2020)

(*49) बाबा जैसे ब्रह्मा बाबा को जो सूक्ष्म शरीर है वो धर्मराज बनता है। तो विष्णु का भी तो सूक्ष्म शरीर ऊपर होता है तो उसका क्या होता है?*

ब्रह्मा का वो शरीर क्या बनता है? (धर्मराज) बनता कब है? ***जब नीचे का ब्रह्मा ऊपर समाता है उसमें तब बनता है धर्मराज।*** विष्णु का रूप क्या है? अब सुनो....

अंतिम समय में, जब लक्ष्मी नारायण का स्वयंवर होंगा। असली रूप विष्णु का तब होंगा। असली रुप क्या होगा? जब स्वयंवर होगा तब असली रूप होगा। और जब मुकुट सिर पे रखा जाएगा, हीरे के साथ। कौन से हीरे के साथ? कोहिनूर हीरे के साथ! रखा जाएगा तो बाप ऊपर से विष्णु का लाइट का शरीर ले करके आएंगे, और जोर से उसमें **टकराएंगे। **लाइट का शरीर नीचे वाले शरीर में मिक्स और विष्णु की जो... श्रीकृष्ण की याददाश्त है वो ख़तम। पुरानी याददाश्त खत्म!!*** फिर चलेगा वन वन वन से।* इसीलिए कभी श्री कृष्ण को बड़े रूप में दिखाया नहीं।और विष्णु को कभी छोटे रूप में दिखाया नहीं। दोनों पार्ट से कोई तालमेल नहीं है। तालमेल खत्म। कब खत्म? जब विष्णु का लाइट का शरीर, स्थूल शरीर में समा जाता है और बाप उसको छोड़कर के, ऐसे छोड़के उसके अंदर जब चले जाते हैं ऊपर..... तब से वन वन वन से शुरू। उसमें ऐसे नहीं कि नारायण की याददाश्त चली जाएंगी सिर्फ ऐसे नहीं लक्ष्मी और नारायण कंबाइंड दिखाया है ना। कंबाइंड दिखाया है। दोनों के ही चली जाएंगे। (10.04.2020)

(50) जो हीरा होता है वह नारायण के इसमें रहेगा लक्ष्मी के इसमें?

दोनों की पावर देखो जैसे मनका बीच में से तोड़ दिया तो आधा आधा हो गया। अब जोड़ दिया तो पूरा। तो ***दोनों की पावर जैसे स्वयंवर हो गया तो एक दूसरे में ट्रांसफर हो जाती है ।*** समझे हाँ... जो उसको होगा वो उसको होगा। जैसे आज कल की दुनिया में आजकल मैं क्या.... जैसे जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं...। (हीरा तो एक ही होगा ना!)हीरा तो एक ही होगा। भई दो हीरों का कहाँ गायन है? हैना! तो जब ***ऐसे जब दोनों के मुकुट ऐसे टच कराएंगे ऐसे स्वयंवर होता है तो ऐसे टच कराते हैं। तो उधर भी पावर... उधर भी पावर, और सब...। ये है विष्णु का पार्ट।*** फिर सूक्ष्म वतन खाली। तब क्या होगा? खाली हो गया। ***और शंकर का पार्ट... तब तक विनाश हुआ तो उसका पुतला पिघल गया। ऐसा नहीं कि वो उधर ही रहेगा, नहीं पिघल गया खाली। जैसे कोई गाँव में बसे हुए गाँव में उजड़ जाता है। कोई रहता नहीं है। सब खत्म!! ऐसे सूक्ष्म वतन फिर खत्म हो जाएगा।*** संगमयुग पे ही सूक्ष्म वतन होता है। हिसाब किताब लेने के लिए, देने के लिए, सब कुछ। समझ में आया? अभी बच्चों को केह रहे हैं, पुरुषार्थ करें।(10.04.2020)

(51) *बाबा ने कहा है मैं जिस में भी आऊँ तो उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े तो दादी में बाबा आया तो उनका नाम ब्रह्मा क्यों नहीं रखा?*

ये देखो वंडरफुल बात बच्चे भी वंडरफुल है। जब पहले बाबा शरीर किसका लेता है? (ब्रह्मा बाबा का) पहले रथ का नाम ब्रह्मा होता है.... दूसरे का किसने कहा ब्रह्मा होता है? ऐसे तो फिर कहेंगे बाबा ने कन्याओं से पार्ट चला रहें, तो सभी ब्रह्मा बन गये। ब्रह्मा मुख वंशावली, ब्राह्मणी मुख वंशावली नहीं कहा। वो ब्राह्मणी है बाप की बच्ची है। ब्रह्मा मतलब क्या? जब पहली बार अपना प्यारा बाबा, शरीर में आते हैं, उसको कहते हैं "ब्रह्मा"।

माँ जन्म देने वाली। ***पालना करने वाली को ब्रह्मा थोड़ी कहेंगे।*** बच्चे ब्राह्मणी बाप की बच्ची है। क्लियर हुआ? और जिनका भी क्वेश्चन है उनको कहना बाबा ने बड़ी याद कर दी है। पर ये पहले अपनी बुद्धि को ठीक देखें, इसमें क्या क्या लिखा है। ज्ञान को समझे, मुरली को समझें। याद प्यार भी देवें। अच्छा और पूछो.... (10.04.2020)

(52) कंचन काया का राज क्या है? कैसे बनेगी कंचन काया? जानवरों का भी जन्म योग बल से होता है क्या?

अच्छा कंचन काया अंतिम समय में कंचन काया। हाँ क्यों नहीं जानवरों का जो भी है उनका भी जन्म योग बल से ही होगा। सातोप्रधान हर एक की अवस्था आती है। कंचन काया बनेगी। इसी शरीर में थोड़ी कंचन काया। इसी शरीर में अब सभी देवताओं को जन्म देने वाले देवता थोड़ी होंगे! अगर देवताओं को जन्म देने वाले देवता हो गए तो पहले उनका गायन होवे। उनका गायन क्यों होवें? इसी संगम युग के बाद... संगम युग में ही हर एक आत्मा अपने शरीर को अपने योग बल के द्वारा कंचन काया बनाएगी और गर्भ में ही बनाएंगे। ऐसे कंचन काया बनाएंगी। हाँ जानवरों का भी कंचन काया होगा। और उनका भी योग बल से ही जन्म। अब ऐसा नहीं कि वो योग तो करते ही नहीं, तो उनका योग बल से जन्म कैसे होगा? ***अगर सृष्टि पतित बनी है तो मनुष्य आत्माओं से बनी है। जानवरों से नहीं बनी है। जैसे मनुष्य आत्माएं पावन, पवित्र बनती जाएंगी..... ऑटोमेटिकली प्रकृति भी अपने आप बनेंगे।*** और जानवर कोई.... ऐसे नहीं कोई मनुष्य.... वो प्रकृति का एक हिस्सा है, जैसे यह शरीर एक हिस्सा है, वैसे वो आत्मा भी....वो जानवरों के शरीर भी प्रकृति का एक हिस्सा है। जब सारी दुनिया पवन बनेंगी तो क्या जानवर पावन नहीं बनेंगे? बनेंगे....! जब प्रकृति पावन बन जाएगी, प्रकृति से शरीर बनेगा, शरीर में आत्मा आएंगी और यह एक डेकोरेशन है सजावट है। सतयुग की सजावट पावन देवी देवताऐं । ठीक है बच्चों। समझ में आया पहले ये बताओ समझ में आया। ***(मनुष्य के प्रभाव से ही जानवरों पर प्रभाव पड़ता है।)*** देखो यह इतनी सी बात को समझो, जब प्रकृति पावन बनेगी, तो शरीर पवन बनेगा। धरती, हवा...शुद्ध सब पावन बनेगा। ***तो जानवर थोड़ी पृथ्वी से अलग है। क्या उनकी कंचन काया नहीं बनेंगी? वह अपने ही, हमारे ही योग बल से बनेंगी। हमारे योग बल से पूरी सृष्टि पवित्र हो सकती है, पावन हो सकती है। प्रकृति हो सकती है तो क्या जानवर नहीं होंगे*** (10.04.2020)

(*53) बाबा मुरली में यह कहते हैं मात-पिता का बाप दादा का याद और गुड मॉर्निंग रूहानी बाप के रूहानी बच्चों को नमस्ते इसका क्या अर्थ है? मात-पिता, फिर बापदादा, फिर रूहानी बाप?*

अच्छा पहले बताओ शरीर के कई नाम पढ़ते हैं ना। घरमें कई नाम स्कूल में कुछ और नाम। आपका भी अलग अलग होगा। अच्छा सुनो.... रूहानी बच्चों की रूहानी मात-

पिता....। किसकी? और बापदादा। माता -- ब्रह्मा, पिता--शिवबाबा, और बापदादा.... और बाप दादा ब्रह्मबाप जब कहा है माँ भी है, बाप भी है, हर, सर्व... सर्व संबंध बाप से जोड़ो, चाहे उसको दादा कहो, चाहे चाचा कहो, चाहे बुआ कहो, चाहे बच्चा कहो, चाहे माता-पिता कहो, चाहे दोस्त कहो, चाहे पत्नी कहो, चाहे पति कहो। है तो एक ही!! मेन main संबंध होता है माता और पिता बाप और दादा। जो असली संबंध से याद करते हैं ना वो माता और पिता और बाप और दादा। माता से प्यार मिलता है, पालना मिलती है। बाप से वर्सा मिलता है। प्रॉपर्टी दादे की होती है। दादे की प्रॉपर्टी ना होवे तो बाप कहाँ से देवें? बतावे? अगर अपने शिवबाबा मतलब दादा वैसे इसको बोलते हैं सिंधी में बड़े भाई को दादा बोलते हैं। लेकिन प्रॉपर्टी के हिसाब से चलेंगे अपन। प्रॉपर्टी के हिसाब से सारी प्रॉपर्टी किसके पास होती है दादा के पास। तो जिससे मिलता है उसी की तरफ से ही तो याद प्यार देंगे ना। जिससे मिलता ही नहीं उसकी तरफ से क्या याद प्यार देवे? माँ से प्यार, पालना, संस्कार मिलता है। बाप से प्रॉपर्टी मिलती है, और दादा मालक होता है! क्या होता है? मालक होता है। मालक से सब कुछ मिलता है। अब समझ में आया? अच्छे से? और बतावे.... (10.04.2020)

(54) जैसे सभी धर्मस्थापक और उनके अनेक अनुयाई साकार में होते हैं। भले उनमें प्रवेश करने वाली आत्मा निराकार होती है। जो उनके नाम बदल जाते हैं ऐसे ही सर्व आत्माओं के पिता शिव किस साकार शरीर के द्वारा ज्ञान दे रहे हैं? जिससे हम सतयुग में जाने लायक बने?

अच्छा!! वंडरफुल बात पूछते भी हैं और फिर मानते भी नहीं हैं। देखो बच्चे बाप तो एक ही कहेंगे। बाप बैठा है चक्कर हर जगह लगाता है अपना कारोबार देखता है। कहाँ नहीं देखेगा भई! उसका है। अब एक ठिकाना नहीं बताएंगे....!! कहना उसकी एक दुकान नहीं है। वो सब जगह घूमता है चक्कर लगाता है। इसका कोई आंसर नहीं नहीं है। वर्सा लेना है तो सही रीति ज्ञान जानकर बापको याद करें। उलझने से वर्सा थोड़ी मिलेगा!! या फिर आज की दुनिया में कहते है मैं ब्रह्मा बाबा हूँ...या मैं कुछ और हूँ। आज सही में ही बाप पूछना चाहते हैं उन बच्चों से.... अपने दिल पे हाथ रखो और सच्चे दिल से... क्या आप जो कहते हैं वो सत्य है? हर तरह से टेली करो संस्कारों से करो.... ज्ञान से करो.....योग से करो.... पर अपने दिल पे हाथ रखके कहो कि मैं कौन हूँ? अपने आप जवाब मिल गया.... पता भी है, सबको... ऐसा नहीं है कि उनको पता नहीं है कि मैं कौन हूँ? अपने आप को कुछ भी बताने से की आप अंबानी हो, या फिर आप प्रधानमंत्री हो, या कोई हो, ऐसे कौन बनेगा? ये सारी चीजें.... यही सारी चीजे पुरुषार्थ में रुकावट है। और यही सारी चीजें उलझा रही है। और यही सब चीजें पुरुषार्थ छोड़कर लगे पड़े हैं, मेरा क्या पार्ट है? मैं ब्रह्मा हूँ या मैं आदिदेव हूँ.... या फिर मैं कोई हूँ? दिल पे हाथ रखे बाप तो यही कहेगा हर एक बच्चे को। अपने दिल पे हाथ रख के पूछ लेंवे अपने आप से। और सचमें बाप से प्यार है तो बाप से भी पूछ लेवे कि कौन है? ठीक है.... (10.04.2020)

(55) त्रिमूर्ति हाउस एक है। तो तिरुमूर्ति जन्म इकट्ठा है।इसका क्या मतलब है?

किसने कहा त्रिमूर्ति जन्म इकट्ठा है? इकट्ठा का मतलब क्या है? एक साथ!! पर नहीं!! एक साथ उसमें क्या... इसमें क्या ग़फ़लत हुई है। **ये ***जो शूटिंग का समय है 100 वर्षी....100 वर्ष समझ गए। इसी में ही आदि में, मध्य में, अंत में। अब एक साथ तीन कैसे पैदा हो जाएंगे? हर एक बारी-बारी, बारी-बारी चलता है।****अच्छा स्थापना, पालना, विनाश एक साथ करके दिखावे! अलग-अलग टाइमिंग है। स्थापना हुई उस समय...। फिर बीच में बाबा ने सभी बच्चों को पालना दिया मधुबन में। दिया? अंतिम समय में विनाश का पार्ट चलेगा। ड्रामा 100 साल का है। 100 साल के अंदर सब कुछ होता है। पर एक साथ नहीं होता है। एक साथ कुछ होगा क्या? अच्छा और पूछो... (10.04.2020)

(56)*कृष्णा और क्राइस्ट की राशि मेल खाती है। दोनों का आपस में क्या कनेक्शन है, इसके बारे में थोड़ा और स्पष्ट कीजिए?*

और स्पष्ट कीजिए। अच्छा तो फिर कंस और कृष्ण की राशि भी एक है। राशी से क्या लेना देना। देखो जिसने पूछा है, क्या समझ रहे हैं कि दोनों एक ही आत्मा है? बिल्कुल नहीं। बिल्कुल नहीं!! हाँ, अभी बता देवे, या नहीं बतावे । ***दोनों को जन्म देने वाली है। माता एक है।*** लेकिन दोनों आपस में अलग-अलग है। ***माता से भल राशि का कनेक्शन हो सकता है। पर आपस में उनका कोई कनेक्शन नहीं।*** ठीक है। समझ गए.... क्यूंकि कारण क्या है? एक ही धर्म से तो अनेक धर्म निकले हैं। आदी सनातन देवी-देवता। तो पैदा कौन करेगा? आदि सनातन धर्म ही तो पैदा करेगा। समझ गए? और कुछ पूछना है। (10.04.2020)

***(57) बाबा ये राम और रावण की राशि एक ही है। कृष्ण और कंस की राशि एक है तो क्या राम ही रावण बनते हैं या कृष्ण ही कंस बनते हैं या जो दोनों राशि है। इसमें क्या रहस्य है? कृष्ण और कंस की राशि है। राम और रावण... की राशि एक है?**

राम की रावण बनता है। कृष्ण ही कंस बनता है। बड़ी वंडरफुल बात सिंपल सी बात हैं..... राम जब संपूर्ण है, तो राम है जब पतित बन गया तब रावण बन गया। सिंपल बात है कृष्ण जब सतयुग का प्रिंस है तो कृष्ण हैं । 84 जन्म ले लिया, तो कंस बन गया। अब बताओ अब आत्मा जब 84 जनम में आएंगी है, अंतिम पतित्वा शरीर होंगा। उनके अंदर विकार है, बुराई है और कंस को भी क्या कहते हैं..... बुराई का प्रतीक दिखाते हैं। पतित पने का प्रतीक दिखाते हैं। वहीं आत्मा 84 जन्म लेकर के कंस बन जाती है। मतलब पतित बन जाती है। राम सर्वगुण संपन्न 16 कला संपूर्ण अंत में क्या बन जाती है, रावण बन जाती है। सिंपल बात हैं। हां अब बतावे।(04.04.2020)

(58) और जो कृष्णा और कंस का युद्ध बताया है??

कृष्ण और कंस का युद्ध!! देखो वर्तमान समय आत्मा अब वही आत्मा अपने आप से क्या करती है,(युद्ध करती हैं)उसको पता है कि मैं आत्मा हूँ , लेकिन बुराई है सामने, क्योंकि जब बाप की बनती है, पहचान मिलती है तो दोनों, ये जो संगम युग का समय है ना इसमें ड्रामा रिपीट मतलब हो रहा है। सबका पर्दे पे आ रहे हैं सब स्टेज पे आ रहे हैं, तो सबका आप अपनी अपनी एक्टिंग कर रहे हैं और डायरेक्टर बैठे बैठे देख रहा है। हर चीज यहीं होती है। देखो आत्मा क्या बन गई , कृष्ण और युद्ध किससे कर रही है। कंस से तो क्या हो गया? शूटिंग हो गया। आत्मा को पहचान मिली कि मैं आत्मा हूँ। और उसको पता है कि मैं पतित आत्मा हूँ। अब मुझे पांच विकारों से क्या करना है, युद्ध करना है तो मैं क्या बन जाऊंगी? (कृष्ण बन जाऊंगी) कृष्ण तो पहले पता पड़ गया, मैं कृष्णा हूँ पर युद्ध करना है। संगम युग पर ही युद्ध होता है। द्वापुर में थोड़ी पता होता है कि मैं पतित हूँ या पावन हूँ। या फिर कृष्ण हूँ, या फिर कंस हूँ। वहाँ थोड़ी पता होता है। सब कुछ पता कहाँ होता है? इधर संगम पर। तो यह फिर जैसे शूटिंग इतनी सी होती है। फिर वह लंबा काल चलती है। समझ गये। अब आत्मा मतलब राम । बुराई मतलब रावण आपस में ही क्या चल रही है? युद्ध!! तो यह किसकी युद्ध है कंस और कृष्ण की। राम और रावण की। सीता -- आत्मा। रावण - बुराई। अभी युद्ध चल रही है, तभी तो उधर दिखाते हैं भक्ति मार्ग की शास्त्रों में। समझे!! पात्र वहाँ दे दिए हैं। शिकीलियाँ बना दी हैं। अभी राम है....तो राम मतलब जिसको सारी दुनिया याद करें। वही दुखी होंगा तो किसको कौन याद करेंगा? मतलब कहाँ का बात कहाँ लगा दिया है। जब आत्मा राम बनती है तो बड़ी प्यारी होती है। कोई दुख नहीं होता। लेकिन जब जन्म लेकरके जब आती है। अंतिम जन्म में, तो क्या बन जाती है, रावण बन जाती है। रावण का प्रतीक बुराई का प्रतीक है।(04.04.2020)

(*59) धरमराज और शंकर का पार्ट एक ही सूक्ष्म शरीर से चलेगा या अलग शरीर से चलेगा??

दोनों अलग अलग से देखो। बच्चे बाप ने कहा "महाकाल" फिर कहा "धर्मराज"! ***महाकाल, धर्मराज का भी बाप है, कौन है? महाकाल कौन है, धर्मराज का भी बाप है।*** महाकाल कौन है? हमारा बाबा है , एक रूप बाप है। दूसरा रूप महाकाल है। तो दोनों पार्ट अलग-अलग है। अपन और ***वो सूक्ष्मवतन वाला ब्रह्मा जब मिलते हैं तो धर्मराज है। शंकर और शिव जब मिलते हैं तो महाकाल है।*** समझ गए समझ गए।(4.04.2020)

(60) लास्ट लास्ट में जब दादी केतन में शिव बाबा आते थे गुलजार दादी के तन में तो आवाज एकदम दादी का नेचुरल आवाज रहता था वो वाली आवाज नहीं रहती थी??

हां, बच्चे वो ***संकेत था कि बाबा रथ चेंज करने वाला भी है, और दूसरी बात उस समय संपूर्ण रूप से बाबा.... संपूर्ण रूप से कहेंगे नहीं आते थे।*** बाप की शक्तियाँ बड़ी पावर थी। ***दूसरी बात इसमें एक और पॉइंट आता है, कि लंबे समय तक बाबा आते-आते एक बाजा बजायेंगे तो धीरे-धीरे दोनों आत्मा की आवाज एक ही हो जाती है। परमात्मा की और शरीर आत्मा की आवाज।*** क्योंकि लंबे समय से उस बजे को बजाया है तो धीरे-धीरे वही आवाज निकलने लगता है और वो लास्ट का संकेत था, कि अभी बाबा बाय बाय करने वाले है। इसलिए समझ में आ गया। (हाँ समझ में आ गया। बिल्कुल क्लियर) (04.04.2020)

(61) साकार के आए हुए बाबा से सभी बच्चे विश्व की कितनी आत्माएं लगभग मिलेंगे 9 लाख या सभी, 16108 या 108!

कब? (अभी के रोल में) वर्तमान समय? कौन से बाबा से? (बाप दादा से) नहीं नहीं एक से पूछा....। (आपसे) अपनसे तो भई सब तो नहीं कहेंगे। सब का पार्ट नहीं है।***जो 33 करोड़ है, उन पर शिवबाबा की दृष्टि पड़ेंगा*** सतयुगी वाले हैं वो धीरे-धीरे.....। हाँ मेजोरिटी पर मिलेंगे क्योंकि राज्य है ना ! राज्य चलाना है ना तो प्यारे प्यारे तो मिलेंगे ही ना। अब ये नहीं सोचो जो बन गए जो मिल गए, वहीं वापस मिलेंगे। उसमें सब मिक्स होके आएंगे। (33 करोड़ पे शिव बाबा की दृष्टि पड़ेगी और आप से कम मिलेंगे, मतलब 900000 के अंदर!) (04.04.2020)

(62) बाबा यह मुख्य चित्र चार है - त्रिमूर्ति लक्ष्मीनारायण, झाड़, गोला यह जो बाबा ने साक्षात्कार कराके चार मुख्य चित्र बनवाए थे। उसमें क्या-क्या गहरे राज की बातें हैं?

देखो बच्चे इसमें चारों ही गहरे हैं। अब इसमें से पूछेंगे ये गहरा ये नहीं है तो वो नहीं उसमें सब गहरे हैं। त्रिमूर्ती इसमें दो मूर्ति का गायन नहीं हैं ***त्रिमूर्ति का गायन है - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर पहले वही है फर्स्ट में क्योंकि, सबसे पहले कौन सा वतन बना? सूक्ष्मवतन!!*** तो गायन सबसे पहले किसका है। सूक्ष्म वतन वासियों का ही रहेगा। सृष्टि पे आ जाओ। फिर त्रिमूर्ति से उससे भी टैली(telly) करते रहो त्रिमूर्ति मतलब भगवान दो नेत्री नहीं है। त्रिनेत्री है। मूर्ति मतलब वो तीनों मूर्तियाँ जो विश्व में अपने आप प्रत्यक्ष हो जाएंगी । ***वो तीन मूर्ति भी ये तीन मूर्ति भी वो भी, ये भी बड़े बच्चे उलझे हुए हैं। पर सुलझने का टाइम आ गया है।*** पर ऐसा नहीं एक बार पेट नहीं भरेंगा । एक बार में भर गया। धीरे-धीरे खिलाएंगे और थोड़ा थोड़ा हजम होना चाहिए।***दूसरा चित्र कौन सा बताया? लक्ष्मी नारायण का तो अच्छा है। उसमें जो लिखित में था ना, बड़ा रहस्य उस समय साक्षात्कार में बड़े बड़े रहस्य खोलते गए खोलते गये।*** पेज कम पड़ गया लिखने के लिए पर रहस्य कम नहीं पड़े। हाँ , कभी-कभी सोचते थे, ये भी लिखे इससे भी खुलेगा बुद्धि ये भी लिखे इससे भी खुलेगा बुद्धि। पर बाबा ने कहा, छोटा बनाओ , छोटा

बनाया । अब तो बिल्कुल छोटा बना दिया। अब तो सिर्फ शिकिल शिकिल दिखाते हैं। लिखित में कुछ भी नहीं है। शिकिल शिकिल दिखादी है, लिखित खत्म कर दी है। ***सब ओरिजिनल सामान बंद कर दिया है। अब ये भी नहीं केह सकते। डुप्लीकेट है। दोनों में कंफ्यूजन है, कुछ तो है।*** चलो हां तो ज्यादा नहीं थोड़ा तो है... कुछ तो है... चित्र रह गये। वृक्ष कल्पवृक्ष। झाड़ का सिंपल है। उस समय बाबा ने झाड़ का भी बड़ा बड़ा रहस्य खोले, बड़े वंडरफुल रहस्य खोलें। साक्षात्कार में जब जाते थे, झाड़ की एक-एक टाल टालियों के रहस्य खोलते थे बाबा। लिखते थे ये आत्मा वो आत्मा ये बड़ा वंडरफुल है.... ये मुख्य मुख्य चित्र है। क्योंकि ***इन्हीं में ही सारा ज्ञान समाया हुआ है। ये जो चित्र है, ये रहस्य से भरे हुए चित्र है,*** पर क्या है ना आजकल बच्चों को भी समय नहीं है पढ़ने लिखने का। अपने में भी रहते हैं, लेकिन अब सबको पढ़ने लिखने का समय आ गया है। बहुत बिजी होते थे अब पढ़ने लिखने का समय आ गया है, अब ऐसा ही चित्र निकलेंगा ऑरिजिनल निकलेंगा।और बच्चे गोला मतलब क्या? एक तो गोला सृष्टि का गोला.... एक पूरा ये गोला। गोल- गोल बाबा भी गोल- गोल। सृष्टि भी गोल- गोल आत्मा भी क्या गोल- गोल । आत्मा कैसी है? गोल गोल ।***गोले के चित्र का बडा रहस्य हैं, चार भाग कर के स्वस्तिका बनाया वो भी बड़ा अच्छा चित्र है। हर एक की बुद्धि उसमें खुल जाती है।*** ध्यान से देखे उसमें लिखत होनी चाहिए। जो पहले लिखत होती थी, अब कहाँ लिखत नहीं है। घड़ी दिखा दी है। टिक टिक चलती है, छुट्टी भाई जो भाई वह 4 चित्रों का गहरे जा जाना जाते हो। काम करना चाहते मार्गदर्शन को देखो पहले लिखे।देखो बच्चे वंडरफुल पार्ट है। यह भी ड्रामा में है। ***हर एक आत्मा अपना अपना पार्ट बजा रही है। पर पार्ट बजाते बजाते भूल गई है कि डायरेक्टर देख रहा है। पार्ट बजाते बजाते आत्माएं भूल गई है कि डायरेक्टर ने क्या-क्या रोल दिया था।*** डायरेक्टर ने कहा था , सतयुग बनाना है। पर एक्टर ने अपना बुद्धि चलाया तो कुछ और बना दिया। हां भई अपन ने अपना बुद्धि कभी नहीं चलाया। (04.04.2020)

(63) जो गड़बड़ कर रहा है उनका तो बहुत बड़ी सजा होगी ना बाबा नहीं?

देखो बच्चे ड्रामा में हर एक आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। अब रोल तो अपना भी चल रहा है। अब समय आ गया है। क्याकी "मुक्तिदाता मुक्ति देने आ गया है"। कौन आ गया है? अब वो "मुक्तिदाता" बन गया है। ***पहले "टीचर" बना.... टीचर बनकर पढ़ाया। अब कौन बन गया? मुक्ति देने वाला "मुक्तिदाता"। जो इतने समय से बंधन में रह के बाप को पुकार रहीं है ना बच्चियाँ वो एक-एक बच्ची अभी आएंगी। इतनी शक्ति बच्चियों में अभी आएंगी कि बंधन अपने आप टूट जाएंगा। क्योंकि पावर इतनी आएंगी।*** अच्छा बच्चो....।(04.04.2020)

(*64) और जो वह एक भक्ति मार्ग में कहानी है जो 16108 रानियों को एकासुर ने बंदी बनाकर रखा था। श्रीकृष्ण उसको मार के उनसे विवाह करते हैं....*

देखो बच्चे यह इधर का ही गायन है। अभी अभी सब कुछ थोड़ी करेंगे। ***अब सीन देखना है ना अच्छा पहले बताओ। सीन देखना है या सुनना है?*** देखना है तो सीन दिखाएं? सीन देखे। हर एक बच्चा क्या देखें?? बोलेंगे तो फिर कुछ..... ***लेकिन सीन देखने में बड़ा मजा आएगा। ठीक है ना, अगर बता दिया तो आप कहेंगे। हमें तो पहले से पता था। तो पहले से पता था,*** तो फिर हमें क्यों नहीं बताया? लेकिन एक एक बच्चे को क्या दिखाएंगे?(04.04.2020)

(65) बाबा ये जो भोले बच्चे जो भटकाए हैं इन अलग अलग पार्टिओं के लोगों ने और आने भी नहीं दे रहें है उनको, तो उनका क्या कर सकते हैं?

बाप आया है ***देखो बच्चे बारी-बारी बाबा क्या कहते हैं, सूत मूँझा दिया है, उलझा दिया है यह कोई भक्ति मार्ग वालों के लिए नहीं कहा। यहीं पर ही जो हुआ यहीं पर ही जो शूटिंग हुआ उसी के लिए कहा सूत किसने मुंझाया... द्वापरयुग से जो आए उन्होंने ही मुंझाया और बाबा अभी आकरके क्या कर रहा है... एक-एक धागे को सीधा कर कर के कर कर के बच्चों को दे रहा है कि बच्चे इसका मतलब ये है। अभी अपने को सीधा जाना है सतयुग में, तो रास्ता भी सीधा दिखाएंगे।*** अब देखो जाना तो वही है अब आपको कहेंगे इस गली से मुड़के उस गली में जाना फिर उधर जाना, फिर उधर जाना। ये तो क्या हुआ, ये तो मुँझा दिया ना तो अभी बाबा सूत को सुलझाने आया है। ***अभी बाबा आया है सीधा सीधा रास्ता बताने। बहुत सारी चीजें हैं वापस रिपीट करोगे तो बुद्धि खराब होंगी क्योंकि वो एक कचरा है जो लेके बैठे हैं उसको निकाल दो।*** सत्यता सब बच्चे जानते हैं, जानते हैं ना? हर एक बच्चा जानता है, बाबा आया है। डायरेक्ट छलांग लगाना है सीधा सतयुग में। और बीती को फुल स्टॉप लगानी है, बिंदु और फिर बन जाना है "बिंदु"। "बिंदु" जाएंगी उड़के परमधाम में वहाँ से आएंगी फिर सतयुग में। ओके समझ में आया? ***देखो बच्चे इस सृष्टि के मनुष्य जो भी मन में आया जो भी पढ़ा मिक्स करके खिला देते हैं। उनको भी नहीं बताएंगे...कहेंगे भई ये चावल ना जापान से आए थे। खाने वाला क्या सोचेगा जापानी चावल खा रहें है। या रशिया से आई थी दाल उसने वहीं खिलाया, बच्चों ने वही खाया और बुद्धि में वही बिठाया।*** लेकिन चावल दाल कहाँ से आई है बच्चों को क्या पता जो बताया गया वही सत सत सत.... सतवचन महाराज करते गए ठीक है। सतवचन महाराज!!! भोले बच्चे हैं ना क्या करेंगे, सत वचन ही करेंगे! तो अब बाबा आया है देखो बच्चे कहते हैं ना अगर प्यार सच्चा होगा ना अंतिम घड़ी में बाप दौड़ के अपने बच्चे का हाथ पकड़ लेगा और आप बच्चों का प्यार किससे था। बाबा से था, सच्चा प्यार था तो बाबा ने वेस्ट नहीं जाने दिया ना, ***अंतिम घड़ी में सभी बच्चों का हाथ कसके पकड़ लिया। तो क्या हुआ अंत भला सब भला। आप की अंतिम घड़ियाँ सुधर गई तो पूरा सतयुग सुधर गया...त्रेता सुधर गया... द्वापर सुधर गया....सब कुछ सुधर गया और पावरफुल बन गए।*** कहते ना ठोकर खाकर गिरे रहे, पड़े रहे उठाने वाला कौन? बाबा ने क्या कहा विदेशियों ने कंगाल बना दिया

भारतवासियों को।कितने धनवान थे कहाँ गया सब धन? ***कहेंगे बाबा लूट लिया...शूटिंग हो गई। विदेशियों ने भारतवासियों को लूट लिया। भले भारतवासियों को लूटा पर क्या हुआ... बाप का प्यार तो दिल से नहीं निकाल पाए, तो धन तो बाबा ने छुपा के रखा है फिर भी मिल जाएगा।*** बच्चे तो अपने है ना... बच्चे तो बच गए जो नहीं बचे हैं, वो आ रहे हैं। ***धीरे-धीरे आएंगे, सब आ रहे हैं जहाँ जहाँ फँसे हैं ना धीरे-धीरे निकल के बारी बारी बारी बारी सब आ रहे हैं। यहाँ से बहुत बड़ा आवाज जाकरके बुद्धि में टकराएंगा।*** अच्छा एक बात बताते हैं। पानी होता है ना पानी, जब पानी अपने ऊपर आता है तो धीरे-धीरे हम पूरा प्रबंध करते हैं कि ये टूटे ना, बांध ना टूटे, नहीं टूटे... लेकिन जब वो और ऊपर आएगा तो क्या होगा? टूटेंगाना। प्रबंध कर रहे हैं पूरा अच्छे से पैक कर रहे हैं, टूटे नहीं, लेकिन इतना सा होल काफी है, टूटने के लिए ठीक है। कब तक? ***वो टूट करके ऐसी बाढ़ आएगी। देखो संभालने के लिए बच्चों को तो तैयार करना पड़ेगा ना! आप कहेंगे बाबा अब इसको कैसे कहाँ बिठायें... कहाँ बिठायें... कहाँ उठाये तो आप बच्चे तैयार नहीं होंगे तो इतना सा होल कहाँ से करेंगे!!तो जैसे पानी को कोई नहीं रोक सकता तो आज की पब्लिक को भी नहीं रोक सकता। रोक सकता हैं..??? जहाँ पानी और पब्लिक वहाँ बाढ़ ही बाढ़ ठीक है।*** ढेर बच्चे आएंगे क्योंकि समय समाप्ति की तरफ है। संदेश हर किसी को जाएंगा। ***बाबा ने क्या कहा मुरली सुनने वाला जब सतयुग में आ सकता है... तो ओम करने वाला त्रेता में। समझदार बच्चे बन गए।*** वो एक सेकंड का काम है, आप उसकी फिक्र नहीं करो। उनकी छलांग तो एक सेकंड में आएंगी पर बच्चे तैयार है ना!! (11.02.2021)

(66) ...कई बच्चे कहते है कि कृष्ण है सूर्यवंशी राधा है चंद्रवंशी दोनों अलग-अलग घराने के होते हैं फिर स्वयंवर होता है, तो... सतयुग में तो सभी सूर्यवंसी होते है तो राधा कैसे चंद्रवंशी होगयी?

देखो बच्चे सतयुग में सब सूर्यवंशी ही होते हैं ठीक है? चंद्रवंशी सूर्यवंशी नहीं। ***चंद्रवंशी कहाँ होते हैं? त्रेता में, और ये तो सिस्टम बैठेगा ही नहीं ना- त्रेता की राधा और सतयुग का श्री कृष्ण का शादी कैसे हो सकता है?*** हा एक हो सकता है कि, जब सतयुग में सतयुग से पार होकर के त्रेता में आते हैं तब। लेकिन चंद्रवंशी... सूर्यवंशी दोनों ही बनेंगे। सतयुग में सूर्यवंशी दोनों ही बनेंगे। त्रेता में चंद्रवंशी दोनों ही बनेंगे, और बच्चे रही मुरली की बात तो - कोई कोई पॉइंट ऐसी भी बोल देते है इधर-उधर भटकाने के लिए.... ।आपको क्या लगता है जहाँ से वह पॉइंट आई है वह सच है?... देखो बच्चे बहुत सारी चीजें हैं जो बच्चों को इधर से उधर ले जाने के लिए लिख देते हैं। उनसे सब लेकर आओ उनके पास क्या-क्या है? जितना भी माल है उनको बोलो अपन को दो, लेकर आओ अपन बताएंगा कितना तारीख को लिखा था... क्या लिखा था। कहाँ का कोमबीनेशन कहाँ जायेगा? राधा चंद्रवंशी और श्री कृष्णा सूर्यवंशी!! तो शादी कैसे होंगी? बतावे? कैसे होंगी? हाँ पहले सूर्यवंशी बनते हैं श्री कृष्णा और उससे पहले उसको चंद्रवंशी कहे या फिर संगमयुग के कहे? ***पहेले अपन (श्री कृष्ण) नीचे आते है फिर राधा क्या करेंगी? बाद***

में आएंगी । उससे पहले एक जाएगा ऊपर, फिर नीचे आएगा ऊपर से, फिर बच्ची ऊपर से नीचे आएंगी। घराना अलग होता है।* जैसे आप बच्चों ने पीपल का पत्ता देखा होगा? ***देखा है ना पीपल का पत्ता? पीपल के पत्ते के बीच में क्या है लाइन है ना? हाँ... और जो भारत है वो सतयुग में क्या होगा? भारत का पूरा आकार पीपल के पत्ते के जैसा होगा। ठीक है? अब राधा का घराना अलग। अपनका घराना अलग। अच्छा वो जो बीच में जो लाइन है ना पीपल के पत्ते की...वो एक नदी है बस और कुछ नहीं। नदी के एक तरफ राधे का घराना एक तरफ अपन का घराना जब उधर से रिश्ता इस तरफ आता है तो स्वयंवर हो जाता है, तो पीपल का पत्ता जुड़ जाता है। (नदी खत्म हो जाती है) नदी खत्म अर्थ में कटती नहीं है.. उसके ऊपर बडा अच्छा स्थान बन जाता है।*** इसलिए विमान में जाते हैं। कैसे जायेंगे? भई वहाँ तो ऐसे तो गाड़ी नहीं होंगी कि चलो भई चलाओ.... नदी के आर पार? विमान में क्यों जाते हैं? अब पूरा घेराव नदी का होता है। कोई कहाँ से निकलती है कोई कहाँ से। बड़ा खूबसूरत नजारा होता है सतयुग में। ***पीपल के पत्ते को देखना। बीच से लाइन कोई उधर से निकल रही है कोई इधर से, उसमें बारिक, बारिक, बरिक, बरिक धारें होती हैं। तो ये जो सतयुग होता है ना, नदी केघेराव से पूरा सजा हुआ होता है, बहुत खूबसूरत होता है। इसलिए भाई गाड़ी तो चलेगी नहीं। चलेगा क्या?*** हाँ..... !! उड़न खटोला... बड़ा अच्छा लगेगा, तो ऐसे... ऐसे... ऐसे... ऐसे.... करेंगे ऊपर ही ऊपर उड़ेंगे ऊपर ही ऊपर घूमेंगे । ऐसे! (संकल्पों से उड़ेगा ना बाबा) संकल्प.... वहाँ थोड़ी स्टार्ट करो ये करो और उड़ाओ। ऑटोमेटिकली। देखो ये दुनिया बनी है संकल्पों से..... भगवान को संकल्प आया, क्या सुंदर दुनिया बनावे और वो ऊपर बैठके बड़ा अच्छा सा नजारे देखते रहे । अब संकल्प आया और वो संकल्प फिर उन आत्माओं में आया। आपके संकल्पों से फिर सतयुग बन गया, और संकल्पों से ही कलयुग बन गया। सिर्फ संकल्पों से। जहाँ देही अभिमानी वहाँ सतयुग की शुरुआत और सतयुग। और जहाँ यहाँ से यहाँ, यहाँ, यहाँ, यहाँ आ गए वहाँ से क्या? कलयुग की निशानी इसने देखा, उसने देखा शिकिल को बाहरी रूप को देखा तो कलयुग आया। आत्मा ने आत्मा को देखा तो क्या आ गया? सतयुग आ गया। त ***क्या करना है अभी? क्या करना है? आत्मा!! क्योंकि क्या अभी क्या आने वाला है। (सतयुग आने वाला है) बहुत सुंदर नजारा इसलिए भक्ति मार्ग में क्या गायन है। भगति मार्ग में दिखाते हैं, कि पीपल के पत्ते पर हँसता हुआ कौन आया? श्री कृष्ण आया... कौन आया? श्री कृष्ण आया। अभी तो ब्रह्मा है फिर श्रीकृष्ण बनेगा इसीलिए भक्ति मार्ग में गायन है। क्योंकि सतयुग का जो पूरा नक्शा है वो पीपल के पत्ते जैसा बन जाएगा और पीपल के पत्ते को हमेशा पवित्रता का वरदान होता है। इसलिए आज भी क्या करते हैं उधर जाते हैं, धागा बांधते हैं, मनोकामना लेते हैं, और स्वाहा.. तथास्तु हो जाता है। क्योंकि उसको भी पवित्रता का प्रतीक दिखाते हैं।*** अब बताओ इतना बड़ा बच्चा इतना छोटा सा पीपल के पते पर कैसे आ सकता? पत्ता डूब जाएगा ना? तो कैसे आएगा? है ना!! वह दिखाते हैं जमुना नदी में ऐसा तैरता हुआ आ रहा है। इतना बड़ा पीपल का पत्ता कहाँ से आएगा? अगर तो हाँ इतना

बड़ा पेड़ होंगा तो बहुत सारे पत्ते होंगे! ***एक ही पत्ता क्यों दिखाते हैं? एक ही पूरा भारत ऐसा बन जाएगा। ठीक है।*** समझ में आ गया? अच्छा! (02.08.2020)

(67) बाबा ये आदिमानव का क्या रोल है?

ये आदिमानव का रोल बड़ा वंडरफुल रोल है....। वैसे तो बताते रहते हैं फिर भी आज...। जो कहते हैं हाँ बहुत ***अलग-अलग पार्टियों ने अपने अलग अलग सवाल-जवाब बनाए हैं।**देवी देवताओं को ही आदिमानव बोल दिया हैं। आदि में जो आए....!! अब सब से पूछना चाहते हैं, आदि में जो आदिमानव आए और देवी-देवताओं के लिए गायन है****आज की सृष्टि के हिसाब से सतयुग और त्रेता का तो किसको याद नहीं ठीक है? लेकिन...द्वापर और कलयुग में आ जाओ। आज के हिसाब से सृष्टि की शुरुआत द्वापुर, कलयुग से हो रही है। द्वापुर.... कलयुग की हिस्ट्री के लोगों के पास उन्ही को आदिमानव बोलते हैं। और ये आदिमानव की बात कौन निकाल रहा है। अज्ञानी!! शास्त्रों में जो है... जो शास्त्रों में है जो ज्ञानी है। आदिमानव बिना कपड़ों के घूमते थे जब सतयुग त्रेता चला गया। द्वापरयुग आया तो अब बताइए विस्तार होगा या नहीं होगा? हो गया। पूरी सृष्टि में विस्तार होगा। हर कोई कहाँ - कहाँ... कहाँ - कहाँ अपना टापू लेकर अपना विमान लेकर पहुँच जाते थे....तो जब विनाश हुआ....कहते हैं ना सोने की द्वारिका नीचे चली गई । जब देवी देवताएं बाहर निकल गए दिखाया है ना? दिखाया है ना भक्ति मार्ग में।(11.10.2020)

(68) हाँ महाभारत में दिखाया है लास्ट में सोने की द्वारिका सागर में चली जाती है...)

और उसमें से जो जो थे , वह सभी निकल करके इधर उधर.... जाते है। अच्छा ठीक है तो.... ओनली सोने की द्वारिका ही नीचे जाती है। कोई वो नहीं जाते हैं। देवी, देवतायें नीचे नहीं जातें हैं। ***सतयुग त्रेता में भारत के अंदर सोने की द्वारिका नीचे चली जाती है।**** और उसमें सभी देवी देवताऐं , वो सब बाहर आ जाते हैं। वो कहाँ कहाँ कहाँ कहाँ चले जाते हैं। क्योंकि उस समय विनाश के दौरान भी है ना कहाँ कहाँ जाते हैं फिर जब विनाश होता है तो क्या कपड़े रहेंगे क्या?? अब वो दौरान आया.... के ***नीचे वाला ऊपर आया**** तो उस टाइम की यह बात है। यह सतयुग त्रेता की बात नहीं है क्योंकि देवी देवताएं तो द्वापुर में भी है। समझ में आया वही देवी देवताओं का बीज कहाँ निकलता है द्वापुर से जन्म कब होता है? ***सतयुग त्रेता...तो द्वापर कलयुग को जन्म देने वाला है। एक छुप गया एक निकल गया। सूरज चांद...!! एक छुप गया, एक निकल गया समझे।**** उस दौरान जब विनाश हुआ तो उस दौरान ऐसा समय आया था...खाने के लिए भी कुछ नहीं था। थोड़ा कोई आत्माएं बहुत सारी आत्माएं खासकर सभी देवी देवतायें खासकर अपनी अपनी पुरानी देह छोड़कर के चले गए थे ऊपर। अब जो कुछ बचे वहाँ से शुरुआत हुई थी द्वापरयुग की । वहाँ से आदिमानव का सीन शुरू होता है। ***बाबा कई कई***

गुफाओं में है ना यह जो हीरे और सोने यह जो है, कई मंदिर में भी*ये है... यह इसीलिए है कहाँ -कहाँ अब नेचुरल से बात जब त्रेतायुग आता है ना जो भी होता है अपना-अपना लेकर जाते साथ में.... कोई किसने कहाँ छुपा दिया कोई किसने कहाँ छुपा दिया। हां थोड़ा थोड़ा थोड़ा थोड़ा वह भी (त्रेता में ऐसे होता है?) त्रेता में नहीं द्वापर में होता है। द्वापुर कलयुग में अच्छा अब की बात कर रहें हैं?? अबकी खानियां होती हैं। वह तो द्वापर कलयुग में छुपाते हैं। मान लीजिए कोई राजा के ऊपर आक्रमण होने वाला है। वह सोचेगा अपन मरेगा कम से कम अपनी प्रजा को तो सुखी रखेगा तो किसी एक को ही विश्वासपात्र को बताते हैं धन का। पर उस राजा को क्या पता होता है कि वह भी मर जाएगा है ना। तो वो ऐसे द्वापर कलयुग में भारत में अनेक राजायें होते हैं जो किसी ने भरके पूरा पूरा वो पेटी होती है वह पुरा नींव में गाढ़ दिया। कभी जमीन में गाढ़ दिया। जमीन में ही गढ़ते थे पहले क्योंकि इस जमीन को ही सेफ समझते थे। यही सेफ हो सकता है। और था भी.... लेकिन लूटने वाले तो उनसे भी ज्यादा चतुर थे। है ना.... तो उस ***दौरान द्वापर कलयुग में क्या करते थे? वो जमीन में गाड़ देते थे!*** तो यह देखो बाप को फिर से सतयुग लाना था तो आपकी सोने की द्वारका नीचे बैठा दी आराम से। और अब कलयुग के बाद फिर वही वापस आएगी। यह बड़ा वंडरफुल रहस्य है। मालूम पड़े तो क्या पता क्या कर लेवे। और *बाबा ने कहा, पतित के तो हाथ लगने नहीं देंगे उसपे क्यूँकि वो तो पावन है। इसीलिए बाबा क्या कहते है विनाश होगा।* सोने की द्वारका का थोड़ी होगा!! मनुष्य आत्माओं का होंगा । ऐसे रहस्य हैं जो लाखों करोड़ों साल तक के दबे हुए ही हैं। उनका थोड़ी... ड्रामा 5000 साल का है...। है... लेकिन मनुष्य के लिए है चक्र है एक! अपने सोने की द्वारिका इतनी मजबूत है क्या वो कभी बूढ़ी होगी!! या फिर वह कभी हीरे जवाहरात कभी टूट फूट के नकली हो जाएंगे, या फिर कुछ ऐसे हो जाएंगे। उसका तो कुछ बिगड़ा ही नहीं है। (सोना तो वैसे के वैसे ही रहता है पानी में भी) वैसे ही रहता है... तो ऐसा थोड़ी कि वो पिघल जाएंगा फिर वापिस... ऐसा नहीं। वो ऐसे के ऐसे नीचे!!फिर जब वह उपर आएंगे तो अपने हिसाब से उसको सेफ कर लेंगे। (मतलब हल्का सा पोलिश वॉलिश करना होगा) बस थोड़ासा... पोलिश भी प्रकृति बड़ा अच्छा से मस्त पॉलिश करती है। ऐसा होता है। समझ में आया..?? पूरा चक्र समझ में आ गया। पूरा चक्र समझ में आ गया।(11.10.2020)

(69) *मैं ब्रह्मा.* *(राम राम जपना पराया माल अपना)*

अच्छा एक बात बताए । आज अपनको गाली देते हैं। ऐसे है... मैं था ब्रह्मा... मैं था ब्रह्मा सब रट्टा लगा रखा है। मैं ब्रह्मा, मैं ब्रह्मा, मैं ब्रह्मा वो तो ऐसा था... वो तो ऐसा था। ***अच्छा जो आप सुना रहे हो, जो ज्ञान के आधार से आप बोलते हो, मैं ब्रह्मा हूँ, वो मुरली कहाँ से चली? वो पहले क्यों नहीं चलाई उन्होंने, फिर आपकी मुरली कहाँ गई। ब्रह्मा से पहले क्यों नहीं चलाई। ब्रह्मा के पहले मुरली निकालो क्यों नहीं निकाली?*** निकालो! अभी तक भी वही चला रहे हैं। अरे कुछ तो नया निकालो। अभी तक भी वही चला रहे हैं। ***(अपना नाम जोड़ के ज्ञान किसी और का नाम अपना जोड़**

दिया...)* अभी देख लेना अभी अपन देखो बता रहे हैं। कोशिश बहुत करेंगे अपना अपना दुकान खोलने की, लेकिन ये बाप है, प्रत्यक्ष है। ***पहले चला गया जब ब्रह्मा की रात थी, अब नहीं चलेगा। कोशिश भल करें।*** कैसे कंपनी को ठप करना है अपन को पता है!! भई अगर अपन चला सकते हैं तो ठप क्यों नहीं सकते?? फिर भी देखो ऐसे बच्चे कैसे मजबूर करते हैं, कि बाप ऐसा नहीं करना चाहता पर बच्चे ऐसे करने के लिए मजबूर करते हैं। ज्ञान होते हुए भी, समझते हुए भी, जानते हुए भी, फिर भी ऐसे करते हैं। क्या करेंगे? और क्यों करते हैं? सबसे बड़ी बात क्यों करते हैं? करते इसलिए कि अपना नाम होवे। नाम, मान, शान और सबसे बड़ी बात... सबसे बड़ी बात ये... (धन) सबसे बड़ा रुपैया।***(राम राम जपना पराया माल अपना)*** बस..!!! वेरी गुड!!और अपना तो अपना कि आपका भी अपना। तो क्या करते? ****ये सब उल्टे पुल्टे काम कर रहे हैं। तो बाप क्या कहेगा ठीक है...। बाप प्रत्यक्ष है।**** ***पहली मुरलियों को उठा करके आपने सब को उल्लू बनाया।***अब अपनको उठाके बनाओ उल्लू!! बनाएंगे?? बिल्कुल नहीं बनाएंगे!!! ***लेकिन कोई बात नहीं ड्रामा! ऐसे बच्चे भी जरूरी है क्योंकि खेलपाल तो कहाँ से होगा!! खेलपाल होना जरूरी है ना?*** (सबसे बड़ा खिलाड़ी बोलते हैं ना बाबा परमात्मा को?) सबसे बड़ा खिलाड़ी नंबर वन खिलाड़ी!!जो कौनसा दाँवपेच चलाता है पता भी नहीं पड़ता। ****जो आज ये केहता हैं-- मैं भगवान हूँ । अरे मूरख!! ये भी पता है कि कौनसी तीर कहाँ से निकलेंगी?**** कौन सी तीर कहाँ से निकलेंगी, मालूम नहीं है बोलता है मैं भगवान हूँ । अपनको बड़ी हँसी आती है बच्चों! ऐसे ऐसे बच्चों पर जो अपने आपको भगवान बोलते हैं। *****अपना बाबा भी बड़ा यह देखो बच्चे एक और भगवान पैदा हो गया धरती पर!!**** कितने नाम गिनाये? ये महामूर्ख की निशानी तो है।* ***चलो अज्ञानी तो सोचते ही हैं, ज्ञानी भी ऐसे बोलतें हैं कि मैं परमात्मा हूँ । मैं शिव हूँ । अच्छा...!!*** तो फिर आप दूसरे शिव होंगे। ****आप किसी और सृष्टि के शिव होंगे। आप अपनी सृष्टि को छोड़के इधर आ गए।*****यह तो एक शिव की है। शिव अनादि है, अनंत है। है ना!!****तो एक इंसान कैसे शिव हो सकता है? कभी नहीं हो सकता। यह तो एक पाप कर्म करते हैं, जो अपने आपको बोलते हैं मैं शिव हूँ, और सबसे बड़ा पाप कर्म वो करते हैं* जो सुनते हैं और यकीन करते हैं कि हाँ यह शिव है। बिल्कुल !क्योंकि ***जो सुन करके भरोसा करते हैं कि हाँ यही शिव है तो वो मूरख कहेंगे !! नहीं नहीं महामूर्ख कहेंगे!! बोलने वाला मूरख कहेंगे, और सुनकर यकीन करने वालों को महा महा महा मूर्ख कहेंगे।*** उनके आगे तीन महामूरख लगा दो। वो भी कम है...। बिल्कुल वो भी कम है क्योंकि इतनी बुद्धि कहाँ गई, कि परमात्मा एक है। एक हम एक हैं, एक के ही हैं। ***पूरी सृष्टि का रचयिता एक ही है। यह वंडरफुल बात है।*** ठीक है बच्चों !(11.10.2020)

(70) चित्रगुप्त बैठा है।* *बड़े गेट का क्या अर्थ है?

आज बाबा ने क्या कहा यज्ञ की समाप्ति का समय नजदीक आ गया है। आ गया है ना.... ***आ गया ना तो तैयारी है.... यज्ञ की समाप्ति!! बड़ा वंडरफुल ड्रामा चलने वाला है*।**

बाप तो नजारे देख रहे हैं। आज देखो छोटा सा कीड़ा आया कौन सा कीड़ा - कोरोना अरे! छोटा सा कीड़ा आया, सब को हिलाके चला गया। अब बताओ जो कहते हैं, धनवान है तो क्या होगा चाहे कितना भी लगावे बचेगा!! ***छोटेसे कीड़े ने अमीर गरीब को एक लाइन में खड़ा कर दिया।*** सबको चाहे कोई इतना हो....चाहे कोई इतना हो, चाहे कोई इतना हो, चाहे कोई भी हो आ गए ना सभी एक ही लाइन में। ***तो अब देखिए एक छोटी बीमारी!! तो आने वाले समय में क्या होगा। आने वाला समय का दृश्य क्या होगा!*** कंट्रोल में आ रहा है? देखो आज किसी भी डॉक्टर के कंट्रोल में आया? डॉक्टर को भी लेकर चला गया। ठीक करने वालों को भी लेकर जा रहे हैं। किसी की अकाले मृत्यु हो रही है तो बच्चों अब देख लो समय का नजारा.... फिर मत कहना बाबा आपने कहा नहीं था। समय बहुत कम है बाप तो तैयार है, बच्चे तैयार है? तैयार है...?? कौन-कौन तैयार है, ***बिना प्रत्यक्ष कराए तो ऊपर लेकर नहीं जाएंगे, ठीक है। बिना पेपर बिना प्रत्यक्ष कराये तो लेकर नहीं जाएंगे।*** बाबा क्या कर रहा है? बच्चे बाप को और बाप बच्चों को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। एक एक को देखता है। ***हर एक आत्मा में सूक्ष्म रूप में क्या लगा है? (कैमरा) हाँ...!!!*** कोई देखे नहीं देखे पर ऊपर सब दिखता है। कई बार सोचते हैं ना छुपके कुछ कर लिया तो क्या हुआ किसी को थोड़ी दिखाई दिया। किसी को थोड़ी पता चला। ***अरे बुद्धू.... (तो उसके लिए चित्रगुप्त बैठा है ना चुपके वालों का) उनका बड़ा चित्रगुप्त बैठा है। और वो चित्रगुप्त ऐसा अच्छे-अच्छे चित्र दिखाता है। गुप्त में चित्र ले लेता है।*** हाँ आप कैमरे की नजर में है। बड़े से बड़ा कैमरा वो है। पर वह बड़ा वंडरफुल है बहुत प्यारा है क्योंकि वह किसी का फोटो किसी को दिखाता नहीं है। उसी को ही दिखाएगा यह देखो आपने क्या-क्या किया था, सब को दिखाएगा। अपना अपना सबको दिखाएंगे। पहले जब कर्म करते हैं तो आत्मा को खुद पता होता है कि मैं क्या कर रहा हूँ । सबसे बड़ी तो खुद आत्मा ही साक्षी होती है उस कर्म की है ना। दिखा रहा है हर घड़ी। क्या आत्मा जब गलत कर रही है इस शरीर के द्वारा उसको जानकारी नहीं है। ऐसा हो ही नहीं सकता, किसको मालूम है नहीं हो.... कि यह कर्म गलत है या सही है !! पता होता है ना फिर भी करें तो क्या कहेंगे। दिखाता है..., हर पल दिखाता है.... हर घड़ी दिखाता है। (पर मानते नहीं लोग) हाँ.... यही तो शक्ति खत्म करता है।इसलिए सोचो हर किसी को पता है, कि मैं क्या कर रहा हूँ या मैं क्या कर रही हूँ, ठीक है,***(बाबा बड़े वाले गेट का क्या अर्थ है?)***बड़े वाले गेट का अर्थ है बड़ा रूप सेवाओं का। संभालने वाले इतने से और आने वाले इतने से तो कैसे चलेगा!! ***बड़े वाले गेट का अर्थ है अब परमधाम का भी बड़ा गेट खुलेगा और बाप के मिलन का भी बड़ा गेट खुलेगा। अब छोटे-छोटे गेट बंद एक ही बड़ा गेट खुलेगा। यहाँ गेट खुला तो ऊपर का गेट खुल गया।*** समझ में आया!! यहाँ का गेट खुला तो परमधाम का गेट भी साथ-साथ खुलेगा। ***मिलते जाओ.... चलते जाओ। इधर थोड़ी रुकेंगे आया ही है, सबको ले जाने के लिए।*** इसलिए बड़ा गेट का अर्थ क्यों पूछ रहे हो? सब डर गए तो!! अब डरना किस बात का? जो होना है कल्याणकारी होना है। अच्छा बताओ सच इतना कड़वा क्यों लगता है? इतना समझ में आता है ना सबको कि जब इस दुनिया में आए हैं, जन्म हुआ है। तो जाना भी तो जरूरी है ना। ***मृत्यु निश्चित है शरीर की! तो घबराहट किस***

बात का.... डर किस बात का..... किस बात का!! जन्म का ठप्पा लग गया तो जन्म गर्भ में ही मृत्यु का ठप्पा भी साथ लेके आता है।* समझ में आया। जन्म का ठप्पा और मृत्यु का ठप्पा दोनों साथ लगके आता है। और ये कभी मना नहीं है। कोइ कहते हैं अरे भगवान ऐसी बातें करता है कि मारने आया हूँ या ले जाने आया हूँ। बाप नहीं मारेगा बाप तो मिलेगा। परमधाम की यात्रा है। ***परिवर्तन संसार का नियम है ना!! बच्चा होगा... जवान होंगा.... फिर बुढा होगा.... फिर बच्चा होगा।*** इस चीज को एक्सेप्ट कर रहे हो? घर है सायंस का साधन है, गाड़ी है, यह कपड़ा भी.... एक अवस्था जब ये नया बनता है.... फिर जब ये मध्यम आता है, फिर जब ये अंतिम अवस्था की तरफ होता है... जैसे परिवर्तन होता है। अब आत्मा भी पहले सतयुग में क्या थी, "सतोप्रधान", नई थी। फिर राजोप्रधान और अब तमोप्रधान। घर जब बना सतोप्रधान.. रहते-रहते राजोप्रधान..... टूटने फूटने लगा तो....तमोप्रधान। ***जब टूटेगा फूटेगा तो उसको तोड़कर फिर नया बनाएंगे ना। यही सृष्टि का नियम है।* *(और आत्मा पे प्रकृति का प्रभाव आता है क्या?)*** बच्चे आत्मा का प्रभाव प्रकृति पर जाता है। दोनों एक जैसे ही..एक साथ साथ चलते हैं। ***जब आत्मा में गिरती कला आयी तब प्रकृति में फैली चारों तरफ वातावरण बना, उससे फिर प्रकृति भी तमोप्रधान हुई।*** प्रकृति में तो इतनी क्षमता है.. आज देखो कितने सारे छेद किए हुए हैं, मालूम है। उस समय एक वर्ष में एक फसल निकलती थी, और आज एक वर्ष में कितनी निकालते हैं? निकालते ही रहते हैं, निकालते रहते हैं, कहां से देंगे इतना अन्न!! तो कितने छेद कर दिए! तो किसने किये? मनुष्य ने ही किए।तो किसने पतित किया? फिर भी देखो, इतनी क्षमता है, फिर भी देती है।***प्रकृति मतलब दाता प्र...कृ...ति देने वाली और हम तो इतना छीन रहे हैं, इतना निचोड़ रहें हैं, इतना निकाल रहे हैं। फिर भी पेट खाली।*** गायन है ना क्या भरता है? पेटी नहीं भारती, पेट भर जाता है, पेटी नहीं भारती । आप सोचो पेटी भर भर के कहाँ -कहाँ दबाके निकल लेते हैं। किस काम की.... किस काम की?कुछ वर्ष पहले भी क्या होता था इकट्ठा किया, कहीं दिवार में छुपाया... देखते हैना, कहाँ कहाँ आज सोने कि खान निकली, फलानी जगह से आज तिजोरी निकली, वहाँ से यह निकला क्या करते थे ****पहले के, छुपाते थे जमीन में गड़ाते थे, और बिना बोले, निकल जाते थे। (भूत बनकर वहाँ रहते थे) उसी पर कहते हैं ना धन पे कुंडली मारकर बैठे रहते है* ।*** यह किस काम का ? है कहाँ मुक्ति है? ***उनको मुक्ति दे सकते हैं बाबा?***बिल्कुल दे सकते हैं, पर मुक्तिदाता बाप के मुक्तिदाता बच्चे। आपको पता है कहाँ -कहाँ ऐसी भी आत्माएं हैं, कहते है बाबा हम मुक्ति देंगे। मुक्ति देते देते एक दिन उनको वही मुक्त करके लेकर चले जाते हैं। ऐसे भी हैं, मुक्ति देंगे। मुक्ति देते देते वही उनको मुक्त करके ले जाते हैं। कारण क्या है? क्योंकि उनको अपनी सेफ्टी नहीं आती। ***जिसको अपनी सेफ्टी आवे, वहीं मुक्ति का दान देवे। क्योंकि अब समय पहले वाला नहीं रहा।*** अब तो किसी की मदद करने चलो तो पहले आप खुद पिटो। यही है ना!! मदद करने चलो पेहले खुद पिटो। मदत ले नहीं ले। अगर बच्चे ऐसे ही किसी की मुक्ति करने चलेंगे, तो पहले आपको ही मुक्त कर देंगे, शरीर से। उसका एक अर्थ... विधी... पेहले खुदकी सेफ्टी फिर मुक्ति का दान देवे । ***खुदकी सेफ्टी नहीं करेंगे और किचड़े में कूद जायेंगे दलदल में फंस जाएंगे निकलेंगे कैसे । पहले चारों तरफ खुद**

को कवर करो... उसके बाद फिर मुक्ति का सकाश दो।* ठीक है बच्चों।(23.10.2020)